प्रयास

संरक्षक की लेखनी से

मेरे लिए यह बहुत हर्श का विशय है कि इस कार्यालय द्वारा हिन्दी के पचार–प्रसार में बढाए हुए कदम – 'प्रयास गृहपत्रिका' और आगे बढ़ रहे हैं। फलस्वरूप पत्रिका का दूसरा अंक आपको समर्पित कर रहा हूँ।

अपने संवैधानिक कर्तव्यों एवं दायित्वों के निर्वहन के साथ साहित्योन्मुख वातावरण बनाये रखने एवं इसके पाठको में अभिरूचि जगाने योग्य इस योगदान के लिए पूरे पत्रिका परिवार को उसकी सफलता एवं अनवरतता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। इस अवसर पर मैं उन संवेदनषील प्रबुद्ध पाठकों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण सराहना पत्रों द्वारा 'प्रयास' पत्रिका का मार्गदर्षन एवं प्रोत्साहन किया।

(अश्विनी अत्रि)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
उत्तराखण्ड, देहरादून

प्रधान संपादक की लेखनी से

राजभाशा हिन्दी के प्रति पूरे देष में बन रहे सकारात्मक माहौल की झलक है 'प्रयास' गृहपत्रिका का यह दूसरा अंक। कार्यालय अध्यक्ष के प्रेरणाप्रद मार्गदर्षन एवं कर्मचारियों के भरपूर प्रयास का फल है– 'प्रयास' के बढ़ते कदम। 'प्रयास' से जुड़े सभी प्रयासरत बन्धु बधाई के पात्र हैं।

कार्यालय के अपने उत्तरदायित्वों को निभाने के साथ हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए साहित्यिक योगदान हेतु सभी लेखकों को बधाई देता हूँ। आप जैसे महत्वपूर्ण पाठकों के अमूल्य सुझाव एवं मार्गदर्षन की कामना करते हुए राजभाशा के गौरवमय सम्मान में 'प्रयास' का यह अंक समर्पित है।

संदीप सिंह
वरिश्ठ उपमहालेखाकार

हिन्दी अधिकारी की लेखनी से

भाशा है–संप्रेशण का माध्यम। पूरे भारत देष में इस संप्रेशणीयता का विस्तार मुख्यतः हिन्दी भाशा द्वारा ही होता है। इसीलिए हिन्दी भाशा का, सीधा एवं सरल होना महत्वपूर्ण है।

भाशा का प्रयोग श्रोता या पाठक की क्षमता के अनुसार होना जरूरी है। यानि भाशा उनकी समझषक्ति के मुताबिक हो। कथन की स्पश्टता का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

तत्पष्चात् सुनिष्चित करना है कि अपनी बात रख लेने पर आपकी बात श्रोता या पाठक ठीक तरह समझ पाएं। इसके लिए पहले, वक्ता या लेखक में एक सच्चा श्रोता/पाठक का गुण होना जरूरी है। क्योंकि एक श्रोता/पाठक जिस तरह समझ पायेगा उस तरह अपनी बात को रखना केवल एक सच्चे श्रोता/पाठक के बस की बात है। इसलिए कहते हैं हरेक पण्डित का अच्छा वक्ता भी होना संभव नहीं। क्रिया हो या प्रतिक्रिया उसे सही वक्त पर सद्भावनापूर्ण तरीके से व्यक्त करने का ध्यान रखा जाना चाहिए। आपकी अपनी बौद्धिक स्तर की बातों को श्रोता/पाठक के स्तर पर समझा पाना ही किसी को अचूक संप्रेशक बना देता है। सरल, सहज व सद्भावनापूर्ण रूप से राजभाशा हिन्दी की संप्रेशणीयता ही 'प्रयास' का लक्ष्य है। वादा रहा यह 'प्रयास' राजभाशा के प्रचार – प्रसार में एक सुबोध कदम रहेगा।

जय हिन्दी।

जय भारत।

शिबी0 टी0 मान्जूरान
हिन्दी अधिकारी

पत्रिका परिवार

संरक्षक : श्री अष्विनी अत्रि
प्रधान महालेखाकार

परामर्षदाता : सुश्री विनीता मिश्र, वरिश्ठ उपमहालेखाकार
श्री राजदीप सिंह, वरिश्ठ उपमहालेखाकार
श्री जयन्त खन्ना, उपमहालेखाकार

प्रधान संपादक : श्री संदीप सिंह, वरिश्ठ उपमहालेखाकार

संपादक : श्री पुश्कर, लेखापरीक्षा अधिकारी
सुश्री शिबी टी मान्जूरान, हिन्दी अधिकारी

संकलनकर्ता अधिकारी : श्रीमती अलका सक्सेना, स0 लेखापरीक्षा
सुश्री रेखा, कनिश्ठ हिन्दी अनुवादक

संकलन सहायक : श्री मधुकर मिश्रा, लेखापरीक्षक

सहायक ऑपरेटर : श्रीमती संगीता जेटली, डाटा एन्ट्री

.....

आपके चंद सराहनीय पत्र – हमारे लिए महत्वपूर्ण

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाषित 'प्रयास' के प्रथम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एत्दर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृश्ठ, पत्रिका में प्रकाषित छायाचित्र एवं सभी रचनाएँ सुन्दर हैं। तथापि श्री प्रभाकर दुबे की कविता 'देवभूमि को नमन्', श्री बी0एल0 श्रीवास्तव का लख 'हिन्दी वैष्विक भाशा के स्वरूप में', श्री महेन्द्र तिवारी की कविता 'कैद में ह गाँधी जी', श्री सन्तोश गुप्ता का लेख 'चाय की प्याली' एवं श्री रवि षंकर का यात्रा वृत्तान्त 'षिर्डी यात्रा' बहुत सराहनीय है।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास एवं प्रकाषन की निरन्तरता हेतु हमारी ओर से हार्दिक षुभकामनाएँ।

आनन्द कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी/प्रषा0
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(ले0 एवं हक0)पष्चिम बंगाल

आपके पत्र संख्याः हिन्दी/गृह–पत्रिका प्रयास/8–2010 द्वारा प्रेशित आपकी कार्यालय पत्रिका 'प्रयास' का प्रथम अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

पत्रिका में निहित, सभी रचनाएँ सुपाठ्य एवं ज्ञानवर्धक होने के अतिरिक्त रोचक भी ह। विषेश रूप से जो रचनाएँ अधिक रोचक लगी, वह हैं– 'चाय की प्याली' , 'मेरी अल्मोड़ा यात्रा', 'षिर्डी यात्रा', 'पषुबलि– एक सामाजिक कुप्रथा', 'जंगल बिना अमंगल' आदि।

पत्रिका की रूप–सज्जा अत्यन्त ही आकर्शक है। हम आषा करते हैं कि आप भविश्य में भी पत्रिका में ऐसी ही उत्कृश्ट रचनाओं को प्रकाषित करते रहेंगे तथा पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत् रहेंगे।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए षुभकामनाओं के साथ।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(ले0 एवं हक0) कर्नाटक, बेंगलूरू

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'प्रयास' के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्श धन्यवाद।

पत्रिका में समाविश्ट सभी लेख, कविताएँ और रचनाएँ तथा हिन्दी से सम्बन्धित सूक्तियाँ, सराहनीय और ज्ञानवर्धक है।

श्री धनप्रकाष लखेड़ा द्वारा लिखित लेख 'क्या आप जानते हैं, श्री कृश्ण कुमार चौरसिया द्वारा लिखित लेख 'देवात्मा हिमालय–एक तपोभूमि' और श्री प्रभाकर दुबे द्वारा लिखित कविता 'देवभूमि को नमन', सराहनीय रचनाएँ हैं।

पत्रिका के सम्पादक मण्डल एवं रचनाकारों के सफल सम्पादन एवं प्रकाषन के लिए हार्दिक बधाई और पत्रिका के उज्जवल भविश्य के लिए षुभकामनाएँ।

पी0 रानी राव
लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा ।।) महाराश्ट्र, नागपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाषित हिन्दी गृह पत्रिका 'प्रयास' के प्रथम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ, लेख एवं कविताएँ स्तरीय एवं सारगर्भित हैं। विषेश रूप से श्री राजीव रंजन भारती द्वारा लिखित 'भारत की पहचान' और श्री प्रभाकर दुबे द्वारा लिखित 'देव भूमि को नमन', प्रषंसनीय हैं।

पत्रिका के श्रेश्ठ पकाषन के लिए बधाई और पत्रिका के स्वर्णिम भविश्य के लिए हार्दिक षुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(ले0 एवं हक0), तमिलनाडु

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाषित हिन्दी गृह पत्रिका 'प्रयास' के प्रथम अंक की पत्रिका प्राप्त हुई, तद्हेतु धन्यवाद।

कार्यालय द्वारा प्रथम हिन्दी पत्रिका 'प्रयास' के लिए किए गए प्रयास हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के प्रकाषन के लिए उपयोग में लाई गई सामग्री उत्कृश्ट है। बजरंग सिंह द्वारा लिखित गर्व 'भारत के नियन्त्रक –महालेखापरीक्षक का संक्षिप्त विवरण' इतिहास के कार्यालय के लिए आवष्यक ज्ञान है। मो0 सलीम द्वारा लिखित 'राश्ट्रगान का अर्थ', महेन्द्र तिवारी द्वारा लिखित व्यंग्य 'कैद में ह गांधीजी', प्रल्हाद सिंह द्वारा लिखित 'जंगल बिना अमंगल', विषेश रूप से सराहनीय रही हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाषन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए षुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले0 एवं हक0)–।।
महाराश्ट्र, नागपुर

आपकी पत्रिका 'प्रयास' के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ सुपाठ्य और ज्ञानवर्धक हैं। सारी रचनाएँ सराहनीय और परणात्मक हैं।

'तीन बात', 'चाय की प्याली' बहुत ही अच्छी थीं। 'प्लास्टिक की थलियों के प्रयोग के दुश्परिणाम', 'योग ही क्यों', 'होम्योपैथी–चिकित्सा की एक कारगर विधि', ता हमें बहुत जानकारी देते हैं। 'माँ की महानता', 'माँ की अभिलाशा', 'छत' कविता अच्छी है।

पत्रिका के उज्जवल भविश्य की आषा करते हुए।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले0 एवं हक0),
आन्ध्रप्रदेष, हैदराबाद

.....आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'प्रयास' के प्रथम अंक की एक प्रति प्राप्त हुइ। कृपया आभार स्वीकार करें।

पत्रिका के माध्यम से राजभाशा हिन्दी के उन्नयन के लिए आपका किया गया प्रयास सराहनीय है। 'प्रयास' अंक का मुख पृश्ठ पर प्रकाषित चित्र उत्तराखण्ड की भव्य सांस्कृतिक विरासत को हमारे सामने उजागर करता है। इस अंक में प्रकाषित सभी रचनाएं उच्च कोटि की तथा भावप्रवण हैं। विषेश तौर पर धन प्रकाष लखेड़ा 'क्या आप जानते हैं', अलका सक्सेना 'प्लास्टिक की थलियों के प्रयोग के दुश्परिणाम', कृश्ण कुमार चौरसिया 'देवात्मा हिमालय–एक तपोभूमि', अषोक कुमार 'होम्योपैथी–चिकित्सा की एक कारगर विधि', तथा मुकेष कुमार 'माँ की महानता' आदि रचनाएं विषेश रूप से प्रभावित करती हैं। इस अंक की साज–सज्जा भी उत्तम है।

पत्रिका के सम्पादक मण्डल तथा सभी रचनाकारों को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता के लिए 'सुगन्धा' परिवार की हार्दिक षुभकामनाएं।

वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्रषासन– ।।)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), चंडीगढ़

आपके कार्यालय से प्रकाषित हिन्दी गृह पत्रिका 'प्रयास' के प्रथम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृश्ठ अति सुन्दर है। पत्रिका में समाहित लेख श्री मो0 सलीम खान का 'राश्ट्रगान का अर्थ', अलका सक्सेना का 'प्लास्टिक थैलियों के प्रयोग के दुश्परिणाम', अलका श्रीवास्तव का 'रोगों से बचने के कुछ कारगर घरेलू नुस्खे', मुकेष कुमार की 'माँ की महानता' अच्छी लगी।

इसके अतिरिक्त पत्रिका में समस्त रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका की अविराम प्रगति हेतु हार्दिक षुभकामनाएँ।

वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाशा अनुभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

विधा	क्र. सं.	रचना	लेखक	पृश्ठ संख्या
गर्व	1	भारतवर्श संघर्श गाथा	अष्विनी कुमार पाण्डेय	
	2	भारत एक नज़र	अष्विनी कुमार पाण्डय	
भाशा–चिन्तन	3	झंझावातों/बाधाओं के बीच बढ़ती हिन्दी	सी0 एस0 त्रिपाठी	
	4	कभी न भूलो	ज्योति धवन	
	5	और रावण मारा गया	महेन्द्र तिवारी	
विचार–मन्थन	6	बदलता समाज	अलका श्रीवास्तव	
	7	सच्चा मित्र	प्रवीण कुमार श्रीवास्तव	
	8	एक लड़की	रेखा	
	9	भारतीय नारी और समाज	अलका सक्सेना	
	10	प्रकृति तथा जीवन	अषोक कुमार	
	11	अपने विवेक को उजागर करें	हिना सलीम खान	
आस्था	12	सक्षम बन कर	प्रभाकर दुबे	
	13	भारत की दो महान विभूतियाँ–विवेकानन्द और गांधी	रेखा	
	14	जानिए–अपनी कर्मभूमि को	के0के0 चौरसिया	
	15	नैतिक वचन	अलका श्रीवास्तव	
	16	जीवन में सत्संग की महत्ता	मीरा दुबे	
गज़ल	17	आँसू	लक्ष्मी तिवारी	
	18	क्या हो तुम ?	अरूण कुमार चौधरी	
	19	अधूरी अदा	सत्यभामा पाण्डेय	
योग–स्वास्थ्य	20	सुबह की सैर	प्रभाकर दुबे	
बाल–साहित्य	21	इण्डिया हमारी कन्ट्रो	अनन्या सिंह चन्देल	
	22	हादसे जिन्दगी के	मा0 षषांक सक्सेना	
	23	पर्यावरण	मा0 षरज़ील सलीम खान	
	24	प्यार और पिटाई	मा0 षरज़ील सलीम खान	
ममता	25	माँ की याद	प्रवीण कुमार श्रीवास्तव	
काव्य	26	जब सब कुछ सिर्फ़ ईष्वर	संदीप सिंह	
	27	जिन्दगी	महावीर सिह रावत	
	28	मेरा षहर	अंकित जैन	
	29	जीने की रीत	राकेष रंजन	
	30	क्या सुनूँ	संगीता जेटली	
	31	आदर्ष पत्नी	संजना चौहान	
	32	गरीब माँ	मानसी जैन	
सामान्य ज्ञान	33	स्वर्ण का रक्तरंजित सफ़र	कु0 अमृता चौरसिया	
यात्रा–संस्मरण	34	जब हाथी ने दौड़ाया	प्रभाकर दुबे	

नैतिक वचन– श्रीमती अलका श्रीवास्तव द्वारा प्रदत्त।

झंझावातों/बाधाओं के बीच बढ़ती हिन्दी

सी.एस.त्रिपाठी
वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राचीन काल से भारत में एक ऐसी सांस्कृतिक एकता विद्यमान है जिसे राष्ट्रीयता का मूलाधार कहा जाता है। इस एकता का माध्यम सदैव भाषा रही है। भारत की एकता के लिए संस्कृत भाषा ने यह आधार तैयार किया। तत्पश्चात् इस दायित्व को प्राकृत एवं अपभ्रंश ने सम्पूर्ण दक्षता के साथ संभाला। अपभ्रंश के पश्चात् जिस भाषा पर यह दायित्व आया, वह हिन्दी थी। मध्यकाल के अनेक संत कवियों यथा जायसी, सूर, तुलसी तथा चंददास ने हिन्दी भाषा में ही जनता के समक्ष सहज ज्ञान, सहजभाव, सहज साधना एवं भक्ति का आदर्श रखा। इन उदारचेत्ता संत एवं भक्त कवियों ने निराशा के अन्धकार में भटकते हुए मानव समाज में अभिनव आदशा के प्रकाश का संचार किया। सबसे महान कार्य जो इन संत एवं भक्त कवियों द्वारा किया गया, वह था साम्य–भावना की स्थापना तथा स्वस्थ समाज के निर्माण का प्रयत्न। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हिन्दी मात्र हिन्दी भाषियों की ही भाषा नहीं रही है, अपितु यह बहुजन समाज के चिंतन और विचार की वाणी भी रही है।

हिन्दीतर कवियों में महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब और हरियाणा के संत एवं भक्त प्रमुख हैं। एक विशेष बात यह है कि जब 'हिन्दी प्रचार' के नारे का अंकुर भी नहीं फूटा था, उस समय हिन्दीतर प्रदेशों में हिन्दी संपर्क की भाषा थी। ब्रजभाषा सार्वदेशिक भाषा थी। वह पूर्व में बंगाल और उत्तर पूर्व में असम तक, पश्चिम में गुजरात और दक्षिण में ट्रावनकोर (तिरूवितांकूर) तक स्वीकृत थी। खड़ी बोली दक्षिण में 'दक्खिनी हिन्दी' के रूप में प्रचार–प्रसार में थी। इस प्रकार हिन्दी प्राचीन समय से ही हमारे बहुभाषी सम्पूर्ण भारत की सम्पर्क भाषा रही ह। देश के चार दिशाओं में स्थित चार धामों एवं कुम्भ पर्व पर आने वाले करोड़ों तीर्थ–यात्री एवं संत महात्मा हिन्दी में ही अपने भाव संप्रेषित करते हैं।

हमारे संविधान में हिन्दी को अचानक राजभाषा का स्थान प्राप्त नहीं हुआ है। उसके पीछे उसका एक गरिमापूण इतिहास रहा है। मध्यकाल की तरह ही स्वतंत्रता आन्दोलन के समय भी हिन्दी ने सभी को एकता के सूत्र में बांध दिया था। इसी कारण स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्रभाषा की परिकल्पना प्रायः सभी राष्ट्रीय नेता एवं विद्वान करते रहे हैं, किन्तु राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने राष्ट्रभाषा के महत्व को गम्भीरता एवं दूरदृष्टि से समझा और इसलिए उन्होंने हिन्दी की सार्वदेशिक व्याप्ति एवं भाषाई विशिष्टिता को देखते हुए हिन्दी को स्वदेशी आन्दोलन का एक

अस्त्र बनाया। उन्होने स्वयं यत्नपूर्वक हिन्दी सीखी। उनका कहना था कि विभिन्न प्रान्तों के पारस्परिक सम्बन्धों के लिए हम हिन्दी सीखें। उन्होंने दक्षिण में हिन्दी शिक्षण का अभियान चलाया और उस दौर में दक्षिण में लाखों लोगों ने हिन्दी सीखो। उनके प्रयास से ही 1925 में कानपुर अधिवेशन में कांग्रेस की अखिल भारतीय स्तरीय कार्यवाही हिन्दी में चलाये जाने का प्रस्ताव पारित किया गया।

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय देश के सभी क्षेत्रों के मनीषियों, क्रान्तिकारियों एवं देशभक्तों ने राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचारित करने का प्रयत्न किया था। उसी राष्ट्रीय भाव से हमारी संविधान सभा में 14 सितम्बर 1949 को हिन्दीतर भाषी सदस्यों के बहुमत से हिन्दी को राजभाषा का स्थान (दर्जा) प्राप्त हुआ था। तभी से प्रति वर्ष 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी, संघ की राजभाषा होगी तथा शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा तथा अनुच्छेद 343 (2) में यह प्रावधान किया गया था कि संविधान के लागू होने के समय से 15 वर्ष की अवधि अर्थात 25 जनवरी 1965 तक संघ के सभी सरकारी कार्यों के लिए पहले की भांति अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता रहेगा। यह देश का दुर्भाग्य है कि स्वतंत्रता आन्दोलन के समय देशवासियों में राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रप्रेम की जो उत्कट भावना थी वह शनैः–शनैः क्षुद्र स्वार्थ एवं क्षेत्रीयता की संकीर्ण भावना के वशीभूत होकर क्षीण होने लगी। हिन्दी भाषियों में हिन्दी के प्रति अतिशय उत्साह एवं दक्षिण में हिन्दी विरोधी आन्दोलन के कारण राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित किया गया, जिसने हिन्दी के साथ–साथ अंग्रेजी के प्रयोग की निरन्तरता को बढ़ा दिया है।

संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी के विकास का उत्तरदायित्व संघ सरकार को सौंपा गया है। इसके अनुपालन में भारत सरकार ने हिन्दी के विकास के लिए वे सभी प्रयास किये हैं, जिससे राजभाषा के रूप में केन्द्रीय सरकार का सारा कामकाज हिन्दी में किया जा सके। शब्दावली, नियमों, अधिनियमों, आदेशों, अनुदेशों, प्रारूपों, परिपत्रों एवं सभी दस्तावेज़ों के वर्तमान में अनुवाद उपलब्ध ह। जनमानस की बोलचाल में प्रचलित अंग्रेजी एवं उर्दू भाषा के शब्दों को शासकीय कामकाज की भाषा में उपयोग किये जाने के आदेश/निर्देश भारत सरकार द्वारा जारी किये गये हैं। बड़ी संख्या में केन्द्र सरकार के कार्यालयों एवं उपक्रमों में राजभाषा कर्मी पदस्थापित किये गये हैं। सूचना क्रान्ति के इस दौर में बढ़ते कम्प्यूटरीकरण को देखते हुए कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने की सुविधा को बढ़ाने के लिए सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा यथेष्ठ प्रयास किये जा रहे हैं। इन्टरनेट पर भी आज हिन्दी लोकप्रिय होती जा रही है।

हिन्दी के वेबपोर्टल समाचार, साहित्य, व्यापार, ज्योतिष तथा सूचना प्राद्यौगिकी आदि की जानकारी सुलभ करा रहे हैं। हिन्दी को विश्वभाषा के रूप में सक्षम बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा बर्धा में स्थापित किये गये महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय

हिन्दी विश्वविद्यालय विदेशा में हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप को विकसित करने के लिए सचेष्ठ है। विश्वविद्यालय ने नई वैश्विक व्यवस्था के अनुरूप विषयों का चयन किया है। विश्वविद्यालय ने हिन्दी के पाठकों एवं अध्येताओं के लिए हिन्दी साहित्य के एक लाख पृष्ठ अपनी वेबसाइट पर उपलब्ध करा दिये हैं तथा इसका विस्तार जारी है। अर्थजगत में एक महाशक्ति के रूप में उदीयमान भारत के उज्जवल भविष्य को देखते हुए विदेशों में हिन्दी शिक्षण एवं प्रशिक्षण का प्रचार–प्रसार हो रहा है। हाल में ही हिन्दी को आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। अमेरिका की प्रख्यात पेन्सिलवेनिया यूनिवर्सिटी ने एम.बी.ए. के छात्रों को हिन्दी का दो वर्षीय पाठ्यक्रम (कोर्स) अनिवार्य कर दिया है। विश्व के सबसे शक्तिशाली देश में हिन्दी की यह स्थिति बता रही है कि आने वाले दिनों में विश्व में हिन्दी की क्या स्थिति रहेगी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह बात स्पष्ट रूप से सामने आ चुकी है कि यदि भारत में विदेशियों को अपना बाजार बनाना है तो उन्हें हिन्दी जाननी–सीखनी होगी। यह तभी सम्भव है जब हिन्दी 'रोजी–रोटी' से जुड़े।

हिन्दी के प्रचार–प्रसार में हिन्दी फिल्मों, टेलीविजन एवं पत्र–पत्रिकाओं का विशेष योगदान है। हिन्दी क्षेत्र की कथा, गाथा, रीति–रिवाज, परिधान एवं गीत–संगीत के माधुर्य ने उसे हिन्दी के मनोरंजन चैनलों के माध्यम से न केवल भारत में, अपितु पूरे विश्व में पहुँचा दिया है। बॉलीवुड की तो प्रारम्भ से ही हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं उसे लोकप्रिय बनाने में महती भूमिका रही है। देश के नक्शे में शायद ही कोई ऐसी जगह बची है, जहां हिन्दी फिल्में या गाने न पहुँचते हों। हिन्दी स्वयं अपने संख्याबल एवं भारतीय संस्कृति की संवाहिका को शक्ति पर विस्तार पा रही है। अंग्रेजी की चकाचौंध में हिन्दी ज्ञान उपेक्षित होते जा रहा है। वर्तमान परिदृश्य में अंग्रेजी का ज्ञान परमावश्यक है, किन्तु उसका अन्धानुकरण घातक है। विश्व में महाशक्ति के रूप में उभरते भारत की राजभाषा हिन्दी अभी तक संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा नहीं बन पाई हैय जबकि वह संख्याबल के अनुसार विश्व की तीसरी भाषा है। दुःखद यह है कि अभी तक वह हिन्दी प्रदेषों की उच्च शिक्षा तथा अनुसंधान संस्थानों की भाषा नहीं है। अतः हिन्दी को समस्त ज्ञानवाहिनी के रूप में विकसित करने के लिए भारत सरकार को पूर्ण राष्ट्रभावना के साथ यथेष्ठ प्रयास करना होगाय तभी सही अर्थो में हिन्दी राजभाषा एवं विश्वभाषा बनने में समर्थ होगी।

जब सब कुछ सिर्फ़ ईष्वर

संदीप सिंह
वरिश्ठ उपमहालेखाकार

वह आत्मा का सृजन कर रहा था,
और अन्धेरों में भटक (मर) रहा था,
ग़मनाम, मदहोष, लेकिन जाग्रत,
अपने विचारों को देख रहा था।
समाज में जीने के लिये,
ज़हर को पीने के लिये।
नक़ाब तो पहननी होती है।
क्योंकि अन्दर की लौ भड़क चुकी है।
कोई क़रीब आयेगा,
जल जायेगा।
और जलना किसने सीखा है,
अन्दर से मीठा, बाहर से तीखा है।
तो डूबते जाओ,
बहते जाओ,
बिना किसी वजह, बिना किसी राह,
बस लेकर एक आह,
एक पुरानी चाह,
कि इस पल में, इसी क्षण में,
इसी अभी में,
बसन्त जागा है
भय भागा है।
और कहीं अन्दर से आवाज़ आई है,
इस पल, इस जीव में
सृश्टि समाई है।।
देख तो सब कुछ सच

न देख तो परछाई है।
झूठ नहीं यह स्वर,
जो कहता
सब कुछ सिर्फ़ ईष्वर।
दुनियादारी, मोह, अहम्,
रेगिस्तान की माया, सच की छाया
एक तपता ज्वर।
एक सच तेरा नाम, बस सच्चा तू
और यह सच, जो कहती मेरी रूह।
किस बात का आख़िर डर,
जब सब कुछ सिफ ईष्वर।।

जानिए–अपनी कर्मभूमी को

के.के.चौरसिया
वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/सेवानिवृत्त

देहरादून नगर एक सौ बीस किलोमीटर लम्बी दून घाटी के मध्य में पचहत्तर किलोमीटर लम्बाई और पच्चीस किलो मीटर चौड़ाई में स्थित है। इसके उत्तर में हिमालय, दक्षिण में षिवालिक पर्वत श्रेणी, पूर्व में सदानीरा मोक्ष दायिनी गंगा तथा पष्चिम में पापनाषिनी यमुना प्रवाहित होती है।

9 नवम्बर 2000 को देष के सत्ताइसवें राज्य के रूप में सृजित उत्तराखण्ड (पूर्व उत्तरांचल) की राजधानी देहरादून का उल्लेख स्कन्ध पुराण में केदार खण्ड क्षेत्र के एक भू–भाग के रूप में किया गया है। तत्पष्चात् इस भू–भाग का उल्लेख मौर्य काल (321–184 ईसा पूर्व) में किया गया और इसकी राजधानी का नाम कलकुट (आज की कालसी) बताया गया। कालसी में आज भी सम्राट अषोक द्वारा निर्मित कराया गया षिलालेख देखा जा सकता है। इस षिलालेख की खोज 1860 में एक अंग्रेज 'मिस्टर फोरेस्ट' द्वारा की गई थी।

वर्तमान रूप में देहरादून को बसाने का श्रेय सिक्खों के सातवें गुरू 'हर राय' के ज्येश्ठ पुत्र 'गुरू राम राय' को जाता है जिन्हें औरंगजेब ने 1675 में अपने राज्य से निश्कासित कर दिया था। गुरू राम राय ने देहरादून की पहाड़ियों में षरण ली और वर्तमान के खुड़बुड़ा क्षेत्र में अपना डेरा जमाया। 1690 में उन्होंने तत्कालीन गढ़वाल के राजा फतेह षाह की सहायता से एक गुरूद्वारे 'गुरूराम राय दरबार' की स्थापना करके अपना झंडा फहराया। तब से इस स्थान पर प्रत्येक वर्श होली के छठे दिन एक विषाल मेले का आयोजन किया जाता है तथा झंडा चौक पर पारम्परिक रूप से झंडा फहराया जाता है।

अंग्रेजों और गोरखों के मध्य 1816 में सुगौली में किये गये युद्ध विराम समझौते के पष्चात्, अंग्रेजों ने देहरादून सहित समस्त गढ़वाल और कुमाऊँ क्षेत्रों पर आधिपत्य कर लिया। इसके फलस्वरूप देहरादून अंग्रेजी सेना के बेस कैम्प तथा अंग्रेजी षिक्षा के केन्द्र के रूप में उभरने लगा। 1850 में पहला मिषनरी स्कूल–सेन्ट

जार्ज कॉलेज बारलोगंज (मसूरी) में स्थापित किया गया। देहरादून में पहला चाय बागान 1863 में स्थापित किया गया। नगर की पहली म्यूनिसिपैल्टी का गठन 1867 में किया गया। एक आधुनिक देहरादून के निर्माण की आधारषिला वास्तव में 1900 में रखी गई जब इसे हरिद्वार से रेल मार्ग से जोड़ा गया। हरिद्वार देष के अन्य भागों से 1886 से ही जुड़ा था। इसी वर्श, पत्रों के आवागमन हेतु विद्यमान 'डिस्ट्रिक्ट पोस्टल सिस्टम' को समाप्त करके इसे 'ऑल इण्डिया पोस्टल सिस्टम' से जोड़ा गया। इसी वर्श देहरादून में पहला रेडियो स्टेषन आज के विद्यमान कचहरी परिसर में स्थापित किया गया जिसे द्वितीय विष्वयुद्ध के दौरान बन्द कर दिया गया था। देहरादून में टेलीफोन की पहली घण्टी 1901 में सुनी गइ तथापि मूसरी में स्थापित किये गये टेलीविज़न टावर के माध्यम से देहरादून में पहला टेलीविज़न प्रसारण 1975 में किया गया।

1901 में देहरादून षहर की जनसंख्या मात्र 24000 के आस–पास थी जबकि ऊचांई पर स्थित राजपुर गाँव की 2900 थी। राजपुर से देहरादून का पेयजल की आपूर्ति पाइपों के माध्यम से की जाती थी। इस समय तक देहरादून पाँच 'च' के लिये प्रसिद्ध हो गया था–चोब (लकड़ी), चूना, चावल, चाय एवं चेस्टनट। कर्नल ई. डब्ल्यू. बेल ने 1920 में पहली बार अपनी फोर्ड टी. मॉडल कार से देहरादून से झड़ी पानी के मार्ग से कुलड़ी (मसूरी) तक की यात्रा की थी। आज के प्रचलित मसूरी मार्ग का निर्माण 1930 तक भट्टा गांव तक ही हुआ था। 1936 तक इसका विस्तार किंग क्रेग (मसूरी) तक, 1954 में लाइब्रेरी एण्ड और 1957 में पिक्चर पैलेस तक हो चुका था। दून घाटी में पहला विद्युत बल्ब 24 मई 1909 को मसूरी में जलाया गया।

भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन ने 1901 में देहरादून के गढ़ी गाँव के पास कैन्टोन्मेंट क्षेत्र में इम्पीरियल कैडेट कोर की स्थापना की जिसमें राज परिवारों के सदस्यों को सैन्य प्रषिक्षण दिये जाने की व्यवस्था थी। 1922 में प्रिस एडवर्ड (अश्टम) द्वारा उसी परिसर में प्रिस ऑफ वेल्स रायल इण्डियन मिलिटरी कॉलेज की स्थापना की गई, जिसे 1932 में वर्तमान इण्डियन मिलिटरी अकादमी (आई.एम.ए.) में परिवर्तित कर दिया गया। 1906 में चांद बाग एस्टेट में, जहाँ आज दून स्कूल स्थित है, वन अनुसंधान संस्थान (एफ.आर.आई.) की स्थापना की गई।

आज के आई.एम.ए. परिसर के चेटवुड भवन में 1930 में रेलवे स्टाफ कॉलेज की स्थापना की गई जो थोड़े ही दिनों में धनाभाव के कारण बन्द कर दिया गया। में ओ.एन.जी.सी. (ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कोरपोरेषन) की स्थापना के साथ ही देहरादून का महत्व और भी बढ़ गया।

बीसवीं षताब्दी के आरम्भ में षार्प मेमोरियल ब्लाइंड स्कूल नाम से नेत्रहीनों के लिए देष के पहले स्कूल की स्थापना देहरादून में की गई। आजादी के पष्चात् 1951 में केन्द्र सरकार द्वारा देहरादून में सेन्ट्रल ब्रेल प्रेस की स्थापना की गई, जो ब्रेल लिपि में नेत्रहोनों के लिये पुस्तकों का प्रकाषन करता था, तत्पष्चात् 1967 में नैषनल इंस्टीट्यूट फॉर विजुअली हैन्डीकैप (एन.आई.वी.एच.) की स्थापना की गई। दून स्कूल के रूप में पब्लिक स्कूलों की नींव सर्वप्रथम प्रसिद्ध बैरिस्टर एवं भारत के वायसराय के एक्सिक्यूटिव काउन्सिल के सदस्य श्री सतीष रंजन दास ने डाली जिसका उद्घाटन 1935 में लार्ड विलिंग्टन ने किया और जिसके प्रथम हेड मास्टर एटन कॉलेज, लन्दन के विज्ञान अध्यापक श्री ए.ई.फूट थे।

देहरादून के स्थानीय सेठ भगवान दास ने देहरादून में प्रथम भारतीय बैंक–भगवान दास बैंक लिमिटेड की नींव रखी जिसके प्रथम अध्यक्ष श्री नेमी दास ने वर्तमान के टाउनहॉल (तत्कालीन जगमिन्दर हॉल), स्पोर्ट्स पैवेलियन तथा दून अस्पताल की महिला षाखा का निर्माण कराया। जिला परिशद के प्रथम अध्यक्ष के रूप में देहरादून के राय बहादुर षेर सिंह ने 1930 में पद ग्रहण किया। उसी वर्श, राय बहादुर उग्रसेन ने देहरादून नगर पालिका के अध्यक्ष के रूप में पद भार ग्रहण किया तथा वर्तमान के एस्लेहॉल षापिंग माल तथा मांडा हाउस काम्पलेक्स का निर्माण कराया। उनके प्रयत्नों से ही देहरादून वासियों ने प्रथम बार घरों के अन्दर नल के पानी की सुविधा का लाभ उठाया। मसूरी सिटी बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में बैरिस्टर दर्षन लाल ने देहरादून–मसूरी रोड को भट्टा गाँव से किंगक्रेग तक विकसित किया एवं लण्डौर क्लाक टावर का निर्माण कराया।

देहरादून घण्टाघर तथा देहरादून नगर पालिका दून के षीर्श व्यापारियों – लाला षेर सिंह तथा लाला आनन्द सिंह के संयुक्त प्रयासों से अस्तित्व में आया, जिसकी नींव तत्कालीन उत्तरप्रदेष की राज्यपाल श्रीमती सरोजनी नायडू ने 2 जुलाई

1948 को रखी, जिसका उद्घाटन स्व0 लाल बहादुर षास्त्री ने 1953 में किया। यह घड़ी सम्पूर्ण एषिया में अपने प्रकार की अकेली हेक्सागोनल (छःमुखी) घड़ी है।

देहरादून के क्लेमेनटाउन क्षेत्र में तिब्बत में नश्ट की गई मिन्ड्रोलिंग मौनेस्ट्री की पुर्नस्थापना की गई जिसका स्तूप विष्व का विषालतम स्तूप है। इसका उद्घाटन तिब्बतीय धर्मगुरू दलाई लामा ने 28 अक्टूबर 2002 को किया। इस मौनेस्ट्री में भगवान बुद्ध की 103 फीट ऊंची प्रतिमा का भी निर्माण किया गया है। सर्वसाधारण में इसे बुद्धा पार्क के नाम से जाना जाता है।

स्वर्ण का रक्तरंजित सफ़र

कु0 अमृता चौरसिया

स्वर्ण का इतिहास मानव सभ्यता के आरम्भिक विकास का इतिहास है। लगभग दस हजार वर्श पूर्व इस पवित्र पीत धातु का प्रथम कण मनुश्य के हाथ में आया था। प्राचीनतम काल में मिश्र देष को स्वर्ण बाहुल्य देष के रूप में जाना जाता था। ज्ञात प्रमाणों के आधार पर दक्षिण अमेरिकी सभ्यता इंका के समय में स्वर्ण को सूर्य देवता की धातु के रूप में माना गया था। इंका के मन्दिरों में अपरिमित मात्रा मं स्वर्ण का उपयोग किया गया था।

क्रिस्टोफर कोलम्बस द्वारा 1492 में अमेरिका महाद्वीप की खोज के पष्चात्, सोलहवीं षताब्दी में यूरोपीय देषों, प्रमुखतः स्पेन एवं पुर्तगाल के लुटेरे नाविकों ने इंका, माया, अज़टेक आदि द्वारा अपने मन्दिरों में संग्रहित स्वर्ण भण्डारो को बुरी तरह लूटा। इस लूट के दौरान किये गये सतत् नरसंहार के कारण ही सम्भवतः उपरोक्त सभ्यताओं का विनाष भी हो गया। 1530 में फ्रांसिस्कों पिजैरो नामक पहले स्पेनी ने इंका के प्रदेष पर अपना लंगर डाला। धर्म भीरू इंका के प्रमुख अताहुआल्पा ने ईष्वर ने प्रतिनिधि मेहमान के रूप में उसका भव्य स्वागत किया परन्तु पिजैरो ने अपने षस्त्रों के बल पर उन्हें पहले बंदी बना कर मुक्ति धन के रूप में उनसे 100 घन मीटर स्वर्ण प्राप्त किया और बाद में उनकी हत्या करके पेरू के उस पवित्र कुज़को (सुज़को) को पूरी तरह लूट लिया। इस प्रकार लगभग दो षताब्दियों तक हर वर्श लूटा हुआ टनों स्वर्ण यूरोप लाया जाता रहा। भारतवर्श में मध्यपूर्व से आये लुटेरों

द्वारा दिल्ली एवं सोमनाथ मन्दिर से लूटा गया स्वर्ण भी इतिहास की बड़ी स्वर्ण लूट के उदाहरण हैं।

इन भीशण लूटों को प्रकृति ने काफी हद तक नियन्त्रित भी किया। 1595 के ग्रीश्म काल में सत्तर लाख डॉलर के लूटे हुये स्वर्ण से भरा 'सैन्टा मार्गेरिटा' जहाज फ्लोरिडा (संयुक्त राज्य अमेरिका) के पास डूब गया। 1643 में छः करोड़ पचास लाख डॉलर के मूल्य का लूटा हुआ स्वर्ण अमेरिका से सेबिली (स्पेन) ले जाते समय समुद्री तूफान की भेंट चढ़ गया। इतिहासज्ञों का मत है कि उस समय के मूल्य के अनुसार लगभग पचास करोड़ डॉलर का लूटा हुआ स्वर्ण कैरेबियन सागर के तल में समाया हुआ है। बहामा और बरमूड़ा द्वीप ऐसे जहाजों के कब्रिस्तान माने गये हैं जिसमें लगभग साठ जहाज अब तक डूब चुके हैं।

अठारवीं षताब्दी आते–आते ब्राज़ील, कैलिफोर्निया, दक्षिण अफ्रीका एवं ऑस्ट्रेलिया आदि देष स्वर्ण बुखार से पीड़ित हो गये, जब स्वर्ण खनन करने वालों के झुंड के झुंड इन स्थानों पर जमा होकर प्रतिस्पर्धा करने लग गये थे। अलास्का में मिले सोने के अम्बार को तो तत्कालीन जार सरकार ने यू0एस0ए0 सरकार को मिट्टी के मोल बेच दिया था। उन्नीसवीं षताब्दी के अन्त में साइबेरियन नदी लीना के तट पर स्वर्ण का अकूत भण्डार पाया गया था। अपने देवता सेमीरामिस का आषीर्वाद प्राप्त करने के लिये असीरिया की रानी ने उनकी बारह मीटर ऊंची और 30 टन वज़न की स्वर्ण प्रतिमा बनवाई थी। उसी प्रकार देवी रि्हआ की सिंहासन पर बैठी 250 टन षुद्ध स्वर्ण की प्रतिमा का भी निर्माण किया गया था।

पहली स्वर्ण मुद्रा का प्रचलन पष्चिमी एषिया माइनर स्थित लीडिया में लगभग 700 ई0पू0 आरम्भ हुआ था। इस मुद्रा में एक ओर लोडियन देवता 'बसारियस' का चित्र तथा दूसरी ओर एक दौड़ती हुई लोमड़ी का चित्र उकेरा गया था। फारस के षासक लोमड़ी का चित्र उकेरा गया था। फारस के षासक साइरस द्वारा लीडिया पर विजय के उपरान्त स्वर्ण मुद्राओं का चलन मध्य–पूर्व के देषों में भी आरम्भ हो गया।

प्रथम रूसी स्वर्ण मुद्रा तत्कालीन रूसी साम्राज्ञी अन्ना लोनोबना द्वारा 1730 में जारी की गई तथा अन्तिम स्वर्ण प्रमाण–पत्र एवं मुद्रा संयुक्त राज्य अमेरीका में 1932

में जारी की गई। भारत में स्वर्ण मुद्रा का ज्ञात इतिहास ईसा पूर्व के वर्शों में सम्राट कनिश्क के षासन काल की ओर इंगित करता है।

अपुश्ट आंकड़ों के अनुसार 2009 के अन्त तक पूरे विष्व में अब तक लगभग एक लाख पैसठ हज़ार टन से अधिक सोना निकाला जा चुका है। भूगर्भवेत्ताओं के अनुसार पृथ्वी की ज़मीन के गर्भ में लगभग एक खरब टन स्वर्ण भण्डार दबा हुआ है तथा लगभग एक अरब टन स्वर्ण विभिन्न सागरों में घुला हुआ है। वर्शा की नदियाँ आमूर की स्वर्ण खानों से प्रतिवर्श लगभग 8.5 टन स्वर्ण प्रषान्त महासागर में बहा ले जाती हैं। 1920 में सर्वप्रथम फिट्ज़ हेबर नामक जर्मन वैज्ञानिक ने अपने प्रयोगों से यह निश्कर्श निकाला कि एक लीटर समुद्रीय जल में 0.0000000001 ग्राम स्वर्ण विद्यमान था। फ्रांस एवं सोवियत रूस में किये गये प्रयोगों से ज्ञात हुआ कि समुद्र में स्वर्ण भक्षण करने वाले बैक्टीरिया तथा ऐसे षैवाल पाये जाते हैं जो स्वर्ण विलयन से स्वर्ण को षोशित कर लेते हैं।

नाभिकीय भौतिक षास्त्रियों ने प्रयोगषाला में कृत्रिम रूप से स्वर्ण धातु की रचना इरीडियम, प्लैटिनम, टैलियम तथा पारे पर न्यूट्रॉन बम्बार्डमेन्ट करके की। पारे से स्वर्ण के निर्माण का अभिलेख वाराणसी हिन्दू विष्वविद्यालय में देखा जा सकता है। ऐसे कृत्रिम निर्माण की लागत प्राकृतिक स्वर्ण की लागत से अधिक होने के कारण वाणिज्यिक रूप से सफल नहीं है।

षुद्ध स्वर्ण अत्यन्त कोमल एवं लचीला होता है। माचिस की तीली पर लगे मसाले के आकार के स्वर्ण खण्ड से लगभग तीन किलो मीटर लम्बा तार खींचा जा सकता है अथवा उसे 50 वर्ग मीटर आकार के पत्रक में पीटा जा सकता है, जिसका रंग पीले से बदल कर नीला–हरा हो जाता है। षुद्ध स्वर्ण पर किसी अम्ल अथवा क्षार का कोई प्रभाव नहीं होता है परन्तु नाइट्रिक अम्ल एवं हाइड्रोक्लोरिक अम्ल के सम्मिश्रण से बने अकुवा रेजिया में यह घुल जाता है।

वाणिज्यिक रूप से पूरे विष्व में दक्षिण अफ्रीका 1880 से स्वर्ण का सर्वोच्च आपूर्तिकर्त्ता था (पचास प्रतिषत) परन्तु 2007 से चीन ने उसका स्थान छीन लिया। विष्व में स्वर्ण का सर्वाधिक उपभोग, आभूशण निर्माण में (पचास प्रतिषत), निवेषों के

रूप में चालीस प्रतिषत तथा दस प्रतिषत का उपभोग उद्योगों एवं औशधियों में किया जाता है। आयुर्वेद में इसे स्वर्ण भस्म के रूप में तथा एलोपैथिक चिकित्सा में इसका उपभोग दन्त विज्ञान, गठिया एवं कैन्सर के उपचार में किया जाता है।

सुपुत्री – श्री के0के0 चौरसिया
वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/सेवानिवृत्त

सुबह की सैर

प्रभाकर दुबे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सुबह–सुबह जब बिस्तर छोड़ा तो तबियत कुछ ठीक लग रही थी तथा अच्छा अनुभव कर रहा था। इच्छा हुई पहले की तरह सुबह की सैर पर जाऊं। पत्नी इस कार्य में नियमित हैं। हालांकि दिनभर की थकान के बाद तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते–करते थकने के बाद, सुबह उनका उठना कठिन होता है। फिर भी सुबह सात बजे निकलने को भी वह मार्निंग वॉक ही कहती हैं तथा अपना नियम तथा कोटा पूरा कर के ही दम लेती हैं। मैं इसे अच्छा मानता हूँ कारण कि इससे नियमितता बनी रहती है तथा आलस्य एवं प्रमाद दूर ही रहते हैं। सुबह क टहलने में ये दोनों सबसे बड़ी बाधाएं हैं जो अनेक बहानों को जन्म देती हैं तथा उनका सहारा लेकर हम जैसे आलसी लोग गला छुड़ाने का प्रयास कर ही लेते हैं। यूं तो प्रातः काल, जिसे षास्त्रों में 'ब्रह्म मुहूर्त' की संज्ञा दी गयी है, की बेला में बिस्तर का त्याग कर नित्य कर्मों से निवृत्त हो कर सैर को जाना हर उम्र के लोगों के लिए लाभदायक

है परन्तु चालीस की उम्र के बाद के लोगों के लिए तो यह अति आवष्यक औशधि है जिसका सेवन उन्हें करना ही चाहिए।

सुबह–सुबह सैर पर जाने के फायदे अनेक हैं जिन्हें लेखबद्ध करना कठिन है। यह उसी प्रकार है जैसे गूंगा व्यक्ति मीठे फल के रस का रसास्वादन तो करता है पर उसका वर्णन षब्दों में नहीं कर पाता, वरन् हाव–भाव से व्यक्त करने का निरर्थक प्रयास मात्र ही कर पाता है। पर मैं इसके जुड़े पहलुओं पर प्रकाष डालने का सार्थक प्रयास करूँगा ताकि पाठक इससे लाभान्वित हो सकें। रात्रि के लम्बे विश्राम के बाद सुबह जल्द उठने से समय की बचत होती है तथा सुबह की ताजी हवा अक्सर प्रदूशण मुक्त होती है कारण कि यातायात का दबाव बहुत कम रहता है। ऑक्सीजन को प्राण की संज्ञा दी गयी है जो जीवन के लिए अत्यन्त आवष्यक तत्व है, ष्वसन तन्त्र के माध्यम से हमारे रक्त में मिलकर, षरीर के सारे अवयवों को जीवन षक्ति प्रदान करने के लिए यह अत्यन्त आवष्यक है, जिसे सम्पूर्ण चिकित्सकीय विधाओं में बखूबी सराहा गया है। प्रातः काल आक्सीजन की प्रचुर तथा षुद्ध मात्रा प्राप्त होती है जो हमारे फेफड़ों को सक्रिय करने, उसके माध्यम से षरीर के अंग–प्रत्यंग में प्रवेष करने, उन्हें सक्रिय बनाने तथा स्वस्थ रखने में सहायक होती है। इसके अतिरिक्त तेज टहलने से हाथ–पैरों का अच्छा व्यायाम होता है जो न केवल स्टेमिना बढ़ाता है वरन् सम्पूर्ण षरीर को मजबूती प्रदान करता है तथा षरीर क सम्पूर्ण जोड़ों की जकड़न को समाप्त कर उनमें नवचेतना का संचार करता है तथा भविश्य में अस्थि सम्बन्धी बीमारियों को होने से रोकता ह। तेज टहलना एक संतुलित व्यायाम है जो वसा की मात्रा को कम करता है तथा व्यक्ति को छरहरा बनाता है जिससे न केवल षरीर की कान्ति में वृद्धि होती है वरन् अधिक वसा के होने से उत्पन्न होने वाली अनेक बीमारियों जैसे–मोटापा, ब्लड प्रेषर, मधुमेह एवं कभी–कभी अवसाद आदि से भी दूर रखता है। पाचन तन्त्र को सक्रिय कर पाचन सम्बन्धी अनेक विकारों को हमेषा–हमेषा के लिए समाप्त करता है, प्राण वाय् की वृद्धि करता है तथा अपान वायु को कम कर जहाँ एक तरफ वात रोगों से छुटकारा दिलाता है, वहीं दूसरी तरफ ऑक्सीजन के रक्त में प्रवेष के कारण त्वचा सम्बन्धी विकारों को दूर कर त्वचा को चिकना तथा कान्तिमय बनाता है। नवचेतना तथा नयी ऊर्जा का संचार कर जीवन को

आनन्दमय तथा सुखमय बनाता है तथा चिकित्सकों के चक्करों से दूर रखता है। सुबह टहलने वाले लोगों से मिलने जुलने के कारण मनुश्य के सामाजिक दायरों में वृद्धि होती है। ह्रदय रोग से छुटकारा पाने का इससे उत्तम उपाय कोई हो ही नहीं सकता। इस प्रकार सुबह की सैर के अनेक ऐसे फायदे हैं जो वर्णन से परे हैं।

अब प्रष्न यह उठता है कि अनेक गुणों से युक्त इस दुश्कर कार्य को अपने दैनिक क्रियाओं में कैसे षामिल करें। इसके उपर्युक्त फायदों को लगभग सभी पढ़े लिखे तथा षिक्षित लोग जानते हैं तथा उनमें से कुछ लोग इसका बखूबी पालन भी करते हैं, पर अधिकतर आज भी वंचित हैं, जिन्हें सक्रिय किया जाना आवष्यक है क्योंकि यह बिना पैसे की दवा है जो जीवन में आनन्द भरने के लिए आवष्यक है। इस कार्य में सबसे बड़ी बाधा है सुबह जल्दी न उठ पाना। इससे छुटकारा पाने के लिए आवष्यक है रात्रि में जल्दी सोना। अंग्रेजी की बहुचर्चित कहावत ''अर्ली टु बेड एण्ड अर्ली टु राइज मेक्स ए मैन हेल्दी वेल्दी एण्ड वाइज'' इसका उत्तम उदाहरण है। रात्रि में देर तक दूरदर्षन के विभिन्न चैनलों पर प्रसारित कार्यक्रमों का मोह त्यागना तथा रात्रि के भोजन की मात्रा कम रखने से सुबह नींद जल्दी खुल सकती है तथा आलस्य का त्याग किया जा सकता है। इसके साथ ही इस कार्य क षुरूआती दौर में साथ का बड़ा महत्व है। यदि अच्छे लोगों का साथ है, जो नियमित हैं, तो यह कार्य अत्यन्त सरल हो जाता है। प्रौढावस्था तथा वृद्धावस्था में पत्नी अच्छे साथी का काम कर सकती ह बषर्ते कि उनकी बातों को नज़र अन्दाज न किया जाए। इसके साथ कपड़े तथा जूते का विषेश ध्यान रखना अति आवष्यक है। कपड़े का चयन मौसम के अनुसार होना चाहिए तथा यथोचित रूप से हल्का एवं आरामदायक तथा आसानी से पसीने को सोखने वाला कपड़ा पहनना ही समीचीन होगा। जूता हल्का तथा आरामदायक होना चाहिए। दो किलो मीटर से प्रारम्भ कर पांच किलो मीटर तक का टहलना सेहत के लिए आवष्यक तथा पर्याप्त भी है।

अब प्रष्न यह उठता है कि इस कार्य के लिए स्थान कैसा होना चाहिए। स्थान का चुनाव इस कार्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा इसका चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए। ऐसा स्थान होना चाहिए जो साफ तथा घर के नजदीक हो तथा व्यवहारिक रूप से पहुंच के अन्दर हो। षहरों में बढ़ती भीड़ तथा गाड़ियों

की बढ़ती संख्या के कारण सैर–सपाटे के स्थान सिकुड़ने लगे हैं एवं बड़े–बड़े पार्कों तथा खेल के मैदानों का अभाव सा होने लगा है। फिर भी देहरादून में बहुत से स्थान ऐसे हैं जो प्रदूशण मुक्त हैं तथा जिनका चयन किया जा सकता है। स्थान स्वच्छ, दुर्गन्धमुक्त एवं वृक्षों तथा वनस्पतियों से हरा–भरा हो ता उत्तम होगा, कारण कि इससे प्रचुर मात्रा में ऑक्सीजन की प्राप्ति होगी जो इसके लिए आवष्यक है। वृक्ष तथा वनस्पतियाँ मनमोहक होती हैं, तथा आनन्द को विवर्धित करती हैं। बसन्त विहार, पंडितवाडो तथा वन अनुसंधान संस्थान (एफ.आर.आई.) के इर्द – गिर्द रहने वालों के लिए एफ.आर.आई. एक वरदान है। इसका वातावरण इस कार्य के लिए सर्वोत्तम तथा उपयुक्त है। यहां का माहौल इस कार्य के लिए अत्यन्त अनुकूल है तथा यहां टहलने वालों की अच्छी खासी तादाद है जो इस कार्य में सहयोगी तथा प्रेरणा का स्रोत है। अतः यह तथा इस जगह के विषेशणों से युक्त किसी भी जगह का चयन सुविधानुसार किया जा सकता है। हमारे ऋशि–मनीशियों ने जंगल तथा एकान्त इस लिए तलाषा, क्योंकि वह स्थान न केवल षान्त व स्वास्थ्यवर्धक था बल्कि वहां प्रदूशण का नामों निषान भी नहीं था तथा नैसर्गिक औशधि के रूप मं षुद्ध जल एवं वायु विद्यमान रहते थ।

उपयुक्त के अलावा कुछ बातें ऐसी हैं, जिन पर ध्यान देना आवष्यक है। जैसे सुबह टहलने का मतलब यह कदापि नहीं है कि तीन बजे रात्रि में ही उठकर चल दिया जाय। इतना प्रकाष अवष्य होना चाहिए कि मार्ग आसानी से दिखायी दे सके। हाथ में एक छोटे बेंत अथवा अच्छी लकड़ी की छड़ी (रूलद्ध का होना आवष्यक है जो आवारा कुत्तों से समय–समय पर बचा सके। खुले तथा निरन्तर आवागमन वाले मार्ग पर विषेश सावधानी बरतना अत्यन्त आवष्यक है ताकि सुबह, तेज गति से चलने वाले वाहनों से बचा जा सके। बरसात में छतरी रखना भी आवष्यक होगा। ब्लड प्रेषर तथा हृदय रोगियों को अत्यधिक ठंड के समय चिकित्सक के परामर्ष को ध्यान में रखना चाहिए।

इस प्रकार सुबह की सैर के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाष डालने का प्रयास किया गया है तथा इसका उद्देष्य अधिक से अधिक लोगों को इस कार्य के लिए

जागरूक करना है ताकि लोग इसका लाभ लेकर प्राकृतिक रूप से स्वस्थ रह सकें तथा बढ़ती उम्र के साथ बढ़ती बीमारियों तथा दवाओं के नियमित सेवन से छुटकारा पा सकें। लेखक पन्द्रह वर्श से नियमित सुबह की सैर करते हैं तथा उपर्युक्त सभी लाभ अनुभवजन्य हैं। हालांकि व्यस्ततम् जीवन, लेखापरीक्षा की नौकरी में जगह–जगह भ्रमण तथा दैनिक क्रियाओं में व्यतिक्रम अवरोध उत्पन्न करता है परन्तु इससे हिम्मत हारने की आवष्यकता नहीं है। जहां रहें जिस हाल में रहें, इस कार्य को न छोड़ें, क्रम यदि टूटता है तो उसे तुरन्त जोड़ने का प्रयास करें तथा इस कार्य में अपना मार्गदर्षक स्वयं बने। आत्म–अनुषासन से ही इसे अपनाया जा सकता है तथा इसका भरपूर लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

जब हाथी ने दौड़ाया

प्रभाकर दुबे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बात उन दिनों की है जब वर्श 2001 में मैं लखनऊ में महालेखाकार (ले0 एवं ह0) कार्यालय की लखनऊ षाखा में वरिश्ठ लेखाकार के पद पर कार्यरत था। उस षाखा में उत्तरप्रदेष वन विभाग के लेखाओं का संकलन तथा लेखा–जोखा किया जाता था तथा विनियोग लेखा के माध्यम से राज्य सरकार को प्रेशित किया जाता था। इस प्रकार कार्य के दौरान वन कर्मियों से परिचय एक सामान्य प्रक्रिया थी। इलाहाबाद में पढ़ाई के दौरान के मेरे एक मित्र भी वन विभाग में वन क्षेत्राधिकारी (रेंज अधिकारी) के पद पर कार्यरत थे तथा उन दिनों उनकी तैनाती नैनीताल जनपद मं विष्व प्रसिद्ध जिम कार्बेट नेषनल पार्क के सर्पदुली रेंज में थी। 2000 में उत्तरांचल बन जाने के कारण, नैनीताल उत्तरप्रदेष से अलग हो चुका था तथा मित्र महोदय ने उत्तरप्रदेष का विकल्प दे रखा था। लखनऊ मुलाकात के दौरान जिम कार्बेट घूमने का उनका आग्रह था, जिसे सहर्श स्वीकार कर लिया गया तथा जिम कार्बेट घूमने का मन बनने लगा था।

हमारे एक मित्र तथा अधिकारी के भी सपरिवार साथ जाने के लिए तैयार हो जाने के कारण, ट्रैन से आने–जाने का आरक्षण भी मिल गया तथा दफ्तर से छुट्टी भी स्वीकृत हो गयी। पांच दिन का कार्यक्रम था, जिसमें मुख्यतः जिम कार्बेट टाइगर नेषनल पार्क तथा नैनीताल देखने तथा घूमने का निष्चय हुआ। उस समय तक जिम कार्बेट के विशय में मुझे कोई खास जानकारी नहीं थी। हालांकि सामान्य ज्ञान की तैयारी के कारण कुछ मोटी–मोटी बातें मालूम थीं, जो कल्पना की उड़ान के लिए नाकाफी थीं। नैनीताल भी मेरे लिए नयी जगह थी तथा नाम से ऐसा प्रतीत होता था कि तालों का षहर है। कुछ घुमक्कड़ लोगों से हल्की फुल्की सामान्य जानकारी अपने ढंग से प्राप्त कर ली गयी, जो कहीं भी जाने के लिए आवष्यक होती है। हालांकि मेरे साथ जाने वाले मेरे साथी स्थान तथा खूबियों से चिर–परिचित थे, परन्तु उनसे इस सम्बन्ध मं बहुत चर्चा नहीं हो पायी। चूंकि उन दिनों मोबाइल फोन का इतना प्रचलन नहीं था तथा संवादहीनता की स्थिति रहती थी, इसलिए मेरे मित्र रेंजर साहब को भी

वहाँ पहुंचने के समय तथा तिथि की सूचना नहीं दी जा सकी तथा हम लोग सपरिवार अचानक लखनऊ से रामनगर पहुँच गय जो उनके लिए भी सरप्राइज था। चूँकि हम लोगों के पहुंचने से लगभग 10 दिन पहले जिम कार्बेट पार्क में षिकारियों द्वारा दो हाथियों का षिकार कर दिया गया था, अतः इस घटना से पूरे वन विभाग में खासकर वन्यजीव षाखा में हड़कम्प मचा हुआ था तथा अधिकारियों का तांता लगा हुआ था। मित्र महोदय भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके, फिर भी उन्होंने हमारे रहने तथा घूमने की व्यवस्था कर दी। गाड़ी की व्यवस्था हम लोगों ने अपने से कर ली थी।

जिम कार्बेट नेषनल पार्क लगभग 600 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ एक विषाल सुरक्षित जंगल है जिसमें प्रवेष के लिए वन संरक्षण के सभी नियमों का पालन करना आवष्यक होता है। जंगल घूमने का यह मेरा पहला अनुभव था। रेंजर साहब ने पहले ही आवष्यक हिदायत दे रखी थी तथा इतना बता दिया था कि जंगल घूमने के लिए प्रकृति प्रेम तथा उस तरह की अभिरुचि आवष्यक है, साथ ही सावधानी बरतना भी उतना ही आवष्यक है। इस सब वार्तालाप में, मुझे भी इस बात का आभास हो चुका था कि जंगली जानवरों से पाला पड़ सकता है जिसका आभास बच्चों को दूर–दूर तक नहीं था, उन्होंने तो पार्क का अर्थ सजा–सजाया बड़ा सा पार्क समझा था, जिसमें विभिन्न प्रकार के झूले लगे होंगे तथा खाने–पीने के सामान की प्रचुरता होगी। यह यात्रा उनके चित्रण के बिल्कुल विपरीत पर अत्यन्त आनन्ददायक तथा रोमांचकारी थी जिसका आभास इसके समापन पर हुआ। पार्क के अन्दर मुख्य द्वार से प्रवेष करते ही गाइड ने हमें म्यूजियम का दर्षन कराया जिसमें जीवन का त्याग कर चुके विषालकाय बाघों तथा अन्य जानवरों को रखा गया था जो अपने जीवित होने का आभास करा रहे थे तथा टाइगर की विषेशताओं का संक्षित परिचय भी दे रहे थे। म्यूजियम घूमते ही जंगल घूमने का वातावरण बन गया। टढ–मेढ एवं ऊपर–नीचे के पथरीले रास्ते तथा घने विषालकाय वृक्षों को अपलक निहारते हमारी गाड़ी गैरल (रेस्ट हाउस) विश्राम गृह पहुंच गयी जो रामगंगा नदी के तटपर अत्यन्त सुरम्य वातावरण में बना हुआ था। वहाँ की प्राकृतिक छटा देखते ही बनती थी। दोपहर का खाना इसी रेस्ट हाउस के कैफीटैरिया में होना था जो मुख्य द्वार से लगभग 20

किलोमीटर की दूरी पर था। कुछ समय नदी के किनारे चहल–कदमी करने तथा रात्रि की यात्रा की थकान के कारण बच्चों के पेट में चूहे कूदने षुरू हो गये थे, जो जंगली जानवरों से भी भयानक रूप ले रहे थे जिसका तत्काल समाधान आवष्यक था। भोजनोपरान्त हमारी गाड़ी सर्पदुली रेंज के लिए प्रस्थान कर गयी, जो हमारे विश्राम के लिए नियत स्थान था। जंगल का हर एक पल रोमांचकारी था, रास्ते में कई जंगली जानवरों जैसे चीतल, सांभर, पाकर, बन्दर, लंगूर तथा अनेकानेक पक्षियां के कलरव सुनते और दर्षन करते व आनन्द लेते हुए लगभग 3 बजे सांय को हम लोग सर्पदुली पहुंच गये।

जिम कार्बेट में यूँ तो सभी कुछ आनन्ददायक है, वहाँ का प्राकृतिक, षान्त, कोलाहल रहित, प्रदूशण मुक्त प्रातः काल तथा सांय काल, जंगली जीवों का स्वच्छन्द विचरण, प्रातः काल तथा सांय काल के सूर्योदय तथा सूर्यास्त की लालिमा का पर्वत षिखर के ऊपर से रामगंगा नदी के जल को आप्लावित करना एवं प्रे वातावरण को सुवर्णमय बनाना; पर वन कर्मियों एवं पथ–प्रदर्षकों का प्रयास आगन्तुकों को टाइगर तथा हाथी दिखाना ही होता है, जिसक लिए यह पार्क प्रसिद्ध है। अतः गाइड के आग्रह पर चाय–नाष्ता लेकर हम लोग ढिकाला रेंज के लिए प्रस्थान कर गये जो जानवरों को देखने का अनुकूल समय था। सूर्यास्त से एक घंटा पहले लगभग पांच बजे हम लोग ढिकाला रेंज के वन विश्राम गृह के प्रांगण में दल–बल के साथ इस प्रत्याषा में प्रवेष कर गये कि षायद टाइगर का दीदार हो जाय, जिसकी अभिलाशा से न केवल भारत के कोने–कोने से वरन् विदेषी भी नित्य प्रति सैकड़ों की संख्या में पार्क भ्रमण को आते है तथा कई–कई दिनों तक इन्तजार करते हैं। प्रकृति प्रेमियों तथा वन्य जीवों स लगाव रखने वालों के लिए जंगल में स्वच्छन्द विचरण करते हुए टाइगर का दर्षन उसी प्रकार है, जैसे संत महात्माओं के लिए ईष्वर दर्षन। लेकिन यह कार्य इतना ही आसान होता तो क्या कहना था?

बहुतों की तरह हम लोग भी टाइगर के दीदार से वंचित रह गये। ढिकाला रेंज के डिप्टी रेंजर ने सूचना दी कि आधे घंटे पहले टाइगर, नदी के उस पार जल ग्रहण करने आया था तथा आधे घंटे तक विचरण करता रहा। उनके इस कथन में सच्चाई हो भी सकतो है और नहीं भी। पार्क भ्रमणकर्ताओं के अन्दर रोमांच पैदा

करने का उनका यह निहायत व्यवसायिक तरीका भी हो सकता है। पर इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि कार्बेट पार्क में टाइगरों की अच्छी खासी तादाद है। आये दिन उनके द्वारा जानवरों को मारना तथा कभी–कभी नरभक्षी होना इसका जीवन्त प्रमाण जो है। खैर, रेंजर साहब ने हाथियों के झुंड के खुले मैदान मं आगमन की सूचना दी तथा साथ ही यह भी कहा कि तुरन्त जाने पर हाथियों को देखा जा सकता है। फिर क्या था गजराज तथा उसके परिवार का दीदार करने के लिए हम लोग मैदान की तरफ सरपट हो लिये।

ढिकाला रेंज के वन विश्राम गृह से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर तीन तरफ से जंगलों तथा एक तरफ नदी से घिरा घास का मैदान है, जिसके बीचों–बीच पक्की सड़क गुजरती है तथा मोटर सफ़ारी के लिए यह नियत रास्ता भी है। हाथी यहाँ अक्सर झुंड में आया करते हैं। चीतल तथा अन्य जानवर भी घास तथा पानी की इच्छा से सुबह–षाम निकलते ही रहते हैं। आगन्तुकों के लिए यह स्थान खास आकर्शण का केन्द्र है। आधा किलोमीटर पहले से ही हाथियों का झुंड सड़क के दोनों ओर दिख गया जो मस्ती से बिना किसी भय तथा बाधा के बढ़ी हुई घास को टूंगने का प्रयास कर रहा था तथा सांय काल की धीमी मन्द बयार का आनन्द भी ले रहा था। उनकी एक जुटता तथा आपसी समझ यह आभास करा रही थी कि वे सभी लगभग एक ही कुनबे के सदस्य थे। उनमें एक विषालकाय षरीर तथा बड़े–बड़े दाँतो वाला भी था। आकार–प्रकार से छोटे व बच्चे बूढ़े नर–मादा सभी परिलक्षित हो रहे थे। हाथियों के इस झुंड को निहारना अत्यन्त सुखद तथा मनोरम था, पर इतने से मन षान्त नहीं हुआ। नजदीक से देखने की इच्छा बलवती हो रही थी। उस समय तक जंगली हाथियों की हिंसक प्रवृत्ति के विशय में मुझे रंच मात्र भी आभास नहीं था। पालतू हाथियों के बगल से गुजरने का अनुभव संजोये मैंने ड्राइवर को गाड़ी आगे बढ़ाने तथा हाथियों के पास ले जाने के लिए प्रेरित करना षुरू किया, कारण कि हाथियों के झुंड को बिल्कुल पास से देखने तथा बच्चों को दिखाने के लोभ का संवरण नहीं कर पा रहा था। इस कार्य में मेरा साथ गाइड ने भी दिया। उसे भी रेंजर साहब के मित्रों को रोमांचित करना था। ड्राइवर इस कार्य के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। नित्यप्रति जंगल की सफ़ारी के कारण वह जंगली हाथियों के उग्र

स्वभाव तथा उसके परिणाम से बखूबी परिचित था, परन्तु मेरे दुराग्रह के आगे लाचार हो उसने गाड़ी आगे बढ़ा दी। हाथियों को षायद हम लोगों का इस तरह नजदीक आना अच्छा नहीं लगा तथा दोनों तरफ के हाथी सड़क के एक तरफ गोलबन्द हो गये तथा हमारी गाड़ी के पास आने का इन्तजार करने लगे। हो सकता है कुनबे के साथ रहने के कारण असुरक्षा की भावना भी हो, उनके इस मनोविज्ञान को समझना आसान नहीं था। जैसे ही गाड़ी समानान्तर सड़क पर पहुंची, बड़े दांत वाले हाथी ने पूरी ताकत से जीप का पीछा किया तथा चारों पैर उठा–उठा कर गाड़ी के पीछे भागना षुरू किया, मानो गाड़ी तथा उसमें बैठे लोगों को अपने आगोष में समा लेना चाहता हो। तथा इस दुस्साहस का दण्ड देने के लिए दृढ़ संकल्पित हो, ताकि फिर कभी कोई गजराज और उसके कुनबे के करीब पहुँचने का साहस न कर पाए। यह दृष्य परिणाम को न जानन वालों के लिए अत्यन्त कौतूहल भरा, रोमांचकारी तथा पुलकित कर देने वाला था। बच्चे तालियां बजा रहे थे तथा पूरे जोर–षोर से चिल्ला रहे थे, हाथो दौड़ा, हाथी दौड़ा। उन्होंने इस क्षण का खूब लुफ्त उठाया पर परिणाम जानने वालों के लिए यह एक भयानक मंजर था। कुछ क्षण के लिए गाड़ी में बैठे सभी बड़ो की सांस लगभग रूक सी गयी थी। गार्ड के तेज आवाज में डांटने तथा गाड़ी और हाथी के बीच दूरी हो जाने के बाद, षायद यह आभास हो जाने पर ही कि उसका कुनबा सुरक्षित है, गजराज ने हम लोगों का पीछा करना छोड़ा। उस घटना की मिश्रित प्रतिक्रिया तत्काल मुझे झेलनी पड़ी। जहाँ ड्राइवर एवं मेरे मित्र जो मेरे साथ लखनऊ से गये थे, ने मेरे लड़कपन पर मुझे खरी–खोटी सुनाई, वहीं, बच्चों ने इस घटना की भूरि–भूरि प्रषंसा की। षायद यह उनके जीवन की आनन्ददायक घटनाओं में से एक थी, लेकिन सब मिलाकर यह एक अपरिपक्व निर्णय था व जंगली हाथी के स्वभाव तथा उसके उग्र व्यवहार क परिणाम के प्रति मेरी अज्ञानता का परिचायक था। गार्ड के लिए यह एक सामान्य घटना थी तथा वह यह सोचकर ही खुष था कि सब मिलाकर अच्छा खासा रोमांचक दृष्य देखने को मिला जो अक्सर जंगलों में भ्रमणकारियों के लिए दुर्लभ होता है। इस घटना के बाद अन्धकार हो जाने के कारण हम सभी लोग सर्पदुली लौट आये जहाँ भोजनोपरान्त रात्रि विश्राम की व्यवस्था थी। दूसरे दिन सुबह हाथी सफ़ारी का कार्यक्रम था। यह

ढाई घंटे का होता है जिसमें घने जंगली रास्तों से गुजरना पड़ता है तथा इसका उद्देष्य भी ''टाइगर दर्षनम्'' ही होता है। सुबह–सुबह ही तैयार होकर हम सभी एलिफेन्ट स्टेषन पहुंच गये जहां से भारी भरकम हाथी पर सवार होकर नदी तथा ऊंचे–नीचे रास्तों से सुनसान, वीरान तथा अत्यन्त घने जंगल से होकर गुजरना था। लगभग ढाई घंटे तक लगातार महावत इस बात का एहसास करता रहा कि टाइगर अभी–अभी यहीं से गुजरा है तथा उसके ताजे पद चिह्न दिखायी दे रहे हैं। इतना ही नहीं उसने बोलने तथा बात करने के लिए स्पश्ट मनाकर रखा था। यहाँ तक कि तेज सांस लेने से भी उसे गुरेज हो रहा था। घने जंगल का वातावरण तथा महावत के द्वारा बनाया गया माहौल टाइगर का सामना हो जाने से भी भयानक तथा रोमांचित करने वाला था, कारण कि उस ढाई घंटे में दो घंटा तो यह बिल्कुल नहीं लगा कि टाइगर ठीक दूसरे क्षण नहीं दिख जायेगा। बच्चों के लिए ढाई घंटे चुप रहना असहय हो रहा था तथा वे लगभग बोर होने लगे थे। हाथी पर घूमने का उनका आकर्शण एक घंटे बाद ही टाइगर के डर से समाप्त हो गया था तथा वे सषंकित तथा भयाक्रान्त से दिख रहे थे। उनमें से कुछ को नींद भी आने लगी थी। टाइगर के अलावा अनेक जानवरों के झुण्ड दिखायी दिये जो अत्यन्त आनन्द–दायक थे। इस प्रकार ढाई घंटे बाद पुनः हम लोग एलीफेन्ट स्टेषन आ गये जहाँ से रेस्ट हाउस नजदीक ही था।

इस प्रकार जिम कार्बेट का यह सफर पूरा हुआ तथा अब वहां से लौटने की बारी थी और आगे के भ्रमण का कार्यक्रम पूरा करना था। जंगल घूमने का यह बिल्कुल नया तथा अनोखा अनुभव था। टाइगर की पूंछ भले न दिखी हो लेकिन उसकी उपस्थिति का एहसास हर क्षण बना रहा। वन विभाग के लोगों का व्यवहार सराहनीय था। हाथी द्वारा दौड़ाये जाने की इस घटना को लगभग ग्यारह वर्श हो गये लेकिन आज भी यह ताजा है तथा मन को पुलकित तथा रोमांचित करता है। यह एक विलक्षण भ्रमण था एवं एक अनोखी घटना से पाला पड़ा था। अभी हाल में दुबारा भी मैं जिम कार्बेट गया पर न तो टाइगर दिखा और न ही हाथी का अनोखा दृष्य। हाथी का दौड़ाया जाना इतने दिनों बाद भी स्मृति पटल पर ताजी घटना के रूप में विद्यमान है। देहरादून में रहने के कारण अब जंगली हाथियों के विशय में

बहुत कुछ सुन तथा जान चुका हूँ तथा उसकी विभीशिका से भी परिचित हूँ। परन्तु उस समय हाथी का दौड़ाया जाना चकित करने वाला, मनोहारी दृष्य था। यह प्रकृति के सभी उपादानों को संरक्षित करने की प्ररेणा देता है। सभी के साथ रहने में ही जीवन का आनन्द है। यह नैराष्य को भगाकर जीवन में खुषी का संचार करता है। जिम कार्बेट का प्रथम भ्रमण मेरी मधुर स्मृतियों में से एक है जिसे मैं कभी नहीं विस्मृत कर पाऊँगा।

भारत की दो महान विभूतियाँ–विवेकानन्द और गांधी

रेखा
कनिश्ठ अनुवादक

स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी दोनों आधुनिक भारत के आकाष में जगमगाते हुए दो ऐसे नक्षत्र हैं, जिनके प्रकाष में भारतीयता आगे की यात्रा तय करती है। इन्हीं दोनों के सम्मिलित प्रयासों के फलस्वरूप ही आज भारत व हम भारतीय गौरवान्वित होते हैं। अतः इन दोनों को आधुनिक भारत के निर्माता कहना अतिषयोक्ति नहीं होगी। हालांकि भारत का जैसा सपना इन दोनों विभूतियों ने संजोया था, हू–ब–हू वैसा भारत निर्मित नहीं हो पाया लेकिन हम भारतवासी जिस लोकतान्त्रिक व स्वतन्त्र फिजा में सांस ले रहे हैं वह इन्हीं के प्रयासों से सम्भव हो पाया है। विवेकानन्द ने जहाँ सांस्कृतिक जागरण का कार्य किया वहीं गांधी ने राजनीति का उन्नयन किया।

विवेकानन्द और गांधी में समानताओं के साथ–साथ असमानताएं भी कम नहीं थीं। विवेकानन्द जहाँ भारत की समद्ध सांस्कृतिक एकता एवं आध्यात्मिक परम्परा से अभिभूत रहते थे, वहीं उन्हें भारत की अज्ञानता, दरिद्रता, निर्बलता, निराषा का भी ज्ञान था। उनका मानना था कि यदि भारत को फिर से अपनी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा को हासिल करना है तो पहले उसे अपनी गरीबी दूर करनो होगी और इसके लिए उन्हें सबसे उचित रास्ता पष्चिमो देषों से विनिमय करना लगा।

विवेकानन्द इस तल्ख हकीकत को जानते थे कि भूखे पेट भजन नहीं हो सकता, अतः निर्धन भारत में धर्म का प्रचार–प्रसार करना व्यर्थ है। अमेरिका जाने के पीछे उनका उद्देष्य वहाँ आध्यात्मिक षिक्षा/ज्ञान देकर भारत के लिए धन जुटाना था। पष्चिम की भौतिक सभ्यता से भी वे प्रभावित थे। अपने छात्र जीवन में ही उन्होंने मिल, स्पेन्सर, षैली, वर्ड्सवर्थ और हीगल को गम्भीरता से पढ़ा। वह पष्चिमी लोकतन्त्र और आधुनिक यन्त्रों के अत्यधिक उपयोग से भी प्रभावित थे। वह वहाँ की सामाजिक श्रेश्ठता और स्त्रियों की स्वतन्त्रता के प्रषंसक थे। अमेरिकियों के आध्यात्मिकता से भिन्न होने के बावजूद भी उन्होंने उनके समाज को श्रेश्ठ माना।

विवेकानन्द पष्चिम से केवल लेना ही नहीं बल्कि देना भी चाहते थे और वह था ''अध्यात्म''। पष्चिम यात्रा में उन्होंने देख लिया था कि भारत षान्त और सन्तुश्ट है जबकि पष्चिम अषान्त एवं असन्तुश्ट। इसलिए आरम्भिक दिनों में वे पाष्चात्य सभ्यता से प्रभावित थे लेकिन बाद में उनका मोह भंग हो गया, जब उन्होंने ऊपर से साफ–सुथरे इस चेहरे के पीछे एक गंदा, वीभत्स चहरा देखा। एक ऐसा अमानवीय चेहरा, जो अपने स्वार्थ के लिए किसी का भी अहित कर सकता है।

पष्चिम की जो पहचान विवेकानन्द को बाद में हुई, गांधी जी को वह षुरूआत में ही हो गई थी। उनके साथ दक्षिण अफ्रोका में जो व्यवहार किया गया उससे उन्हें पहले ही सच्चाई का पता चल चुका था कि इन गोरों के मन कितने काले हैं। इतने अपमान व बर्बरताओं को सहने पर भी वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। गांधी जी अपने अध्ययन काल सहित इंग्लैण्ड व दक्षिण अफ्रीका में लगभग 25 वर्श रहे। इस बीच उन्होंने पष्चिम को जितना जाना व समझा उस आधार पर कभो उसकी प्रषंसा नहीं की बल्कि समय–समय पर उसकी आलोचना ही करते रहे। वे कहते थे कि पष्चिमी लोगों में सड़न ने घर कर लिया है, यह सभ्यता दूसरों का नाष करने वाली और खुद नाषवान है, इससे दूर रहना चाहिए।

पष्चिम के यांत्रिक जीवन को भी उन्होंने स्वीकृति नहीं दी, क्योंकि स्वचालित यंत्र मनुश्य को बेकार कर देंगे। अतः गांधी जी ने पष्चिम से कभी कोई उम्मीद नहीं रखी और न कोई सहयोग मांगा। वे हमें हमेषा तैयार करते रहे कि भारत का उद्धार भारत को ही करना होगा।

इस प्रकार विदित होता है कि स्वामी विवेकानन्द व महात्मा गांधो में कई असमानताएं थीं। लेकिन यह तथ्य भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि विवेकानन्द को मात्र 40 वर्श का जीवन मिला, जबकि गांधी जी को 78 साल का। विवेकानन्द ने काफी कम समय में इतना कुछ कर दिखाया था जो गांधी जी के लिए भी प्रेरणास्रोत बना। जैसे– द्ररिद्र नारायण की सेवा। गांधी ने यह षब्द विवेकानन्द से लिया था।

वर्तमान भारत जिस उद्देष्य को लेकर उठा है, उसका प्रारम्भ विवेकानन्द कर चुके थे, बाद में गांधी जी व सुभाश चन्द्र बोस उस उद्देष्य को कार्यरूप में परिणत करने का प्रयास करते रहे।

एक लडकी

रेखा
कनिश्ठ अनुवादक

क्षितिज के पार जाती है, मुस्कुराती हुई 'एक लड़की',
नन्हीं सी परी है वो, फूलों की पंखुड़ियों से भी कोमल,
मासूम सी निगाहें उसकी, चमकती हैं जैसे आसमां में बिजली,
खिलखिलातो है ऐसे वो, जैसे मोती जड़ दिए हों किसी ने,

प्यारी सी जुबां से, तुतलाती हुई 'एक लड़की',
निगाहें उसकी, रहती हैं हरदम कुछ खोजती,
कदम चाहते हैं रूक जाना कहीं,
फिर अचानक वो डरती हुई 'एक लड़की',

रोती–गिड़गिड़ाती है वो, माँ के सामने, पिता के सामने,
आने दो मुझे इस दुनिया में, तुम्हारी प्यारी सी बगिया में,
एक नन्ही कली हूँ मैं तो, खुषियाँ बिखेरूंगी तुम्हारी दुनिया मे,

रोने लगती है अचानक वो, सकुचाती हुई 'एक लड़की',
जब देखती है कि माँ–बाप ने ही उसे, पैदा भी न होने दिया,
जाती है तब स्वर्ग में, विधाता के पास,
कहती है फिर, आओ मेरी सखियों, मिलकर रहेंगे हम–तुम,

उसके जैसी नन्हीं कलियाँ स्वर्ग में खेलती हुइ
विधाता से कहती है फिर हंसती हुई 'एक लडकी',
यहीं रहना है मुझे, स्वर्ग में ही मैं रहूंगी,
धरती पर जाकर लगता है डर मुझे, अपने अस्तित्व के खोने का,

विधाता से कहती हुई गर्वीली 'एक लडकी',
सारी कन्याओं को वापस बुलाओ,
जमीं वालां को लड़की की अहमियत समझाओ,
न भेजना हमें जमीं पर तब तक,
हाथ जोड़ें, प्रार्थनाएँ न करें जब तक,
अब है फिर से, मुस्कुराती हुई 'एक लड़की'

अपने विवेक को उजागर करें

हिना सलीम
वरिश्ठ लेखापरीक्षक

मनुश्य सृश्टि के सभी प्राणियों में से श्रेश्ठ माना जाता ह, इसका कारण स्पश्ट है। वह यह कि मनुश्य सोच सकता है अच्छे–बुरे की पहचान और दोनों में विवेक कर सकता है। अन्य समस्त प्राणियों की तुलना में केवल मनुश्य ही अच्छे को अच्छा, बुरे को बुरा कह सकने की बुद्धि और क्षमता रखता है। भविश्य की अच्छी–बुरी जो और जितने प्रकार की भी सम्भावनाएं है, उन सबका एक मात्र कारण मनुश्य ही है। उसमें देवता और दानव (राक्षस) एक साथ निवास करते ह। इस प्रकार स्पश्ट है कि इच्छा करने पर केवल मनुश्य ही है जो चाहे कुछ भी चुन सकता है। कलासम्राट स्वर्गीय मंषी प्रेमचन्द का यह मानना था कि अपने मूल स्वभाव से कोई भी मनुश्य बुरा नहीं हुआ करता। वह देव–तुल्य गुण–स्वभाव लेकर जन्म लिया करता है। वह तो परिस्थितियाँ ही ह जो उसे अच्छा या बुरा बना दिया करती ह। मनुश्य होने के नाते हमारा परम कर्तव्य हो जाता है कि हर हाल में हम दूसरों से प्यार बढ़ाएं। मनुश्य तथा अन्य प्राणी अनेक वगों तथा जातियों में बंटे हुए हैं, पर प्रेम की कोई जाति नहीं होती, प्रेम की सत्ता और भावना को तो पषु–पक्षी तक पहचानते और मानते हैं। वास्तव में प्रेम में प्रभु का निवास हुआ करता है। मनुश्य होने के नाते मनुश्यों से प्रेम करें, जो ऐसा नहीं करते वे मनुश्य कहलाने के अधिकारी नहीं है।

मै आपको मानवता के उदाहरण के रूप में एक कहानी बताती हूँ।

कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। लखनऊ स्टेषन पर स्टेषन मास्टर अपने केबिन में बैठे थे। पास ही एक अंगीठी जल रही थी। ठंड से बचने के लिए एक वृद्धा स्टेषन मास्टर की अंगीठी के पास पहुंच गयी।

स्टेषन मास्टर ने इसे अपना अपमान समझा। उसन उस वृद्धा को जोर–जोर से डांटना षुरू कर दिया। स्टेषन मास्टर के चिल्लाने की आवाज सुनकर वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ में से एक आदमी आगे आकर स्टेषन मास्टर से बोला ‘‘आप ईसाई ह, सुना ह रोज बाईबिल पढ़ते ह, फिर बाईबिल की सीख अपने आचरण में क्यों नहीं लाते? आप जैसे लोग ऐसे आचरण करेंगे तो मानवता के मापदण्ड नश्ट हो

जायेंगे''। इतना कहने के बाद उस व्यक्ति ने अपनी रेषमी, गरम ऊनी चादर उस बुढ़िया के ऊपर डाल दी और भीड़ के साथ आगे बढ़ गया। यह यात्री था–पादरी सी0एफ0एन्ड्रूज जो जीवन भर पीड़ित मानवता की सेवा में संलग्न रहे।

हमें किसी की बुराई करने से पहले देख लेना चाहिए कि हम में तो कोई बुराई नहीं है, यदि है तो पहले उसे दूर करना चाहिये। हम जितना समय दूसरों की निन्दा में लगाते हं यदि उतना समय मानवता की भलाई में लगायं या समाज सेवा में लगायं तो सफल जीवन जीयेंगे।

अतः द्वेश को त्याग कर सफलता की ओर बढ़ें। कोई भी कार्य करते समय अपने मन को अच्छे भावों और संस्कारों से ओत–प्रोत रखना ही सांसारिक जीवन में सफलता प्राप्ति का मूल मन्त्र है।

हम जहाँ रह रहे हैं उस संसार को नहीं बदल सकत, पर अपने को बदल सकते हैं, मानवता एवं समाज की सेवा करके। जीवन कितना भी बड़ा क्यों न हो, समय की बर्बादी से बहुत छोटा रह जाता है। जो समय की बर्बादी करते हं समय उन्हें बर्बाद करता है। हमें अपने जोवन को उद्देष्य के लिये जीना चाहिये। परिश्रम करके जीवन में सफलता मिलती है। मानवता को जीवन की कसौटी पर परखने के लिये निम्नलिखित अनमोल वचनों को सदैव याद रखना चाहिए।

- सबसे बड़ा दीन–दुर्बल वह है, जिसका अपने ऊपर नियन्त्रण नहीं है।
- साथंक और प्रभावी उपदेष वह है जो वाणी नहीं, अपने आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।
- कुकर्मी से बढ़कर अभागा कोई नहीं क्योंकि विपत्ति में उसका साथी वही होता है।
- असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।
- जो कुछ आप बच्चों को सिखाते हं, उस पर स्वयं अमल करें तो संसार स्वर्ग बन जायेगा।
- जो जैसा साचता है व करता है वह वैसा ही बन जाता है।

- सच बोलने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बोले हुये षब्दों को याद नहीं रखना पड़ता।

प्यार और पिटाई

मास्टर षहज़ील खान

टीचर ने पढ़ाई को लेकर मुझको मारा
मैं रोने लगा तो प्यार से पुचकारा
फिर कहा देखो मैं इसलिए तुम्हें मारती हूँ
क्योंकि मुझे तुमसे प्यार है और इस चपत से मै तुम्हारी गलती सुधारती हूँ
घर में माँ भी अक्सर तुम्हें मारतो होगी
तुम्हारे उज्जवल भविश्य के लिये तुम्हें सुधारती होगी
मैं बोला – मैडम! इस बात पर मुझे एक बात याद आ रही है
ऐसा प्यार मेरी माँ मुझ पर दस वर्शो से बरसा रही है
मै इसलिये रो रहा हूँ कि वह मुझे सुधार नहीं पा रही है।

पर्यावरण

आओ तुम्हें एक बात बतायें,
पर्यावरण को कैसे स्वच्छ बनाय।
सुरक्षित रख जल स्रोतों को,
जीवित रख अपने वृक्षा को,
वाहनों का कर सीमित प्रयोग,
हर वस्तु का करें पूर्ण उपयोग।
पॉलिथीन को करें बहिश्कृत,
हरियाली को करें स्वीकृत
जीवन से प्रदूशण का नाम मिटाएं
भारतवर्श को स्वर्ग बनायें।
आओ तुम्हें एक बात बतायें
पर्यावरण की रक्षा का संकल्प निभायें।

सुपुत्र–मो0 सलीम खान
वरिश्ठ लेखापरीक्षक

हादसे ज़िन्दगी के

मा0 षषांक सक्सेना

मै और मेरा भाई,
हमारा सिर्फ था भगवान सांई
न थी माँ, न थे पिता,
न कर सकते थे ज़िद
न मांग सके खिलौना।
हम दोनों ने अपने दिल की,
किसी से नहीं कही, क्या ऐसी ही जिन्दगी थी सही।
कहते हैं सब कि, होते हैं भगवान,
करते हैं वो सबकी रखवाली
बस षायद हमारी झोली रह गयी खाली।
हम दोनों भाई, रहते थे सड़क पर
देखा सबने, न खायी तरस किसी ने हम पर,
न खाना, न पीना
लोग जो फेंकते, हम उसे ही खा लेते,
भीख देना तो बात दूर को,
आंसू पोंछने वाला तक नहीं था कोई
खैर....., भाई को जब हो गई बीमारी,
गये डाक्टर के पास,
पर पैसे नहीं थे पास,
डाक्टर ने कहा, 'वेल्कम प्लीज़ विथ फीस'
नहीं करा पाया, मैं उसका इलाज,
नहीं रोक पाया, मैं उसकी बीमारी,
थोड़ी सी तो थी खुषी, वो भी छीन ली सारी,
कुछ महीनों तक, न वो बोल पाया, न चल पाया,
मैं एक कोने में, उसे अधमरा लिए बैठा रहा,
एक दिन आया, जब उसने सिर्फ इतना कहा
'मेरा प्यारा'.....और फिर.....
भगवान ने छीन लिया
मेरा एकमात्र सहारा।

सुपुत्र–श्रीमती अलका सक्सेना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सक्षम बन कर

प्रभाकर दुबे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सक्षम बन कर, इस जग में,
तुम अपना नाम कमाओ।
करो काम मस्ती से अपना,
कभी न आस लगाओ।
सक्षम बन कर, इस जग में.....
बनो विनम्र सदा वाणी से,
काम करो अनुषासन से।
षान्ति दूत बनकर के जग में,
सबको राह दिखाओ।
सक्षम बन कर, इस जग में.....
दीन–दुःखी के काम तुम आओ
समय बिताओ परहित में।
गांधी के सिद्धान्त पर चलकर,
मातृभूमि हित मर मिट जाओ।
सक्षम बन कर, इस जग में.....
जाति–धर्म, का भेद मिटाकर
मन से हटाकर छुआ–छूत को।
क्षेत्रवाद को न अपना कर,
सबको गले लगाओ।
सक्षम बन कर, इस जग में.....
नियम बनाओ सोच–समझ कर,
पालन जिसका संभव हो।
आसानी से समझ से सब,
जीवन जिससे सुखमय हो।

सक्षम बन कर, इस जग में.....
राजनीति व कूटनीति से,
काम नहीं बनता है सब कुछ
राश्ट्रहित सर्वोपरि रखकर,
सबको न्याय दिलाओ।
सक्षम बन कर, इस जग में.....
भारत का कल्याण तभी है,
मिलकर भार उठाओ।
नफरत की दीवार ढहा कर,
सबको गले लगाओ।
सक्षम बन कर, इस जग में.....
काम कठिन मगर मुमकिन है
ऐसी वृत्ति बनाओ।
समभाव में रहना सीखो
ज्ञान की ज्योति जलाओ।
सक्षम बन कर, इस जग में.....
जीवन सफल बनेगा जब
स्वार्थ को दूर भगाओ।
यह संदेष प्रभाकर का,
जन–जन तक पहुंचाओ।
सक्षम बन कर, इस जग में,
तुम अपना नाम कमाओ।

भारतीय नारी और समाज

अलका सक्सेना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय समाज स्वयं को चाहे कितना भी आधुनिक क्यों न बना ले, यहाँ नारी की स्थिति आज भी पुरूशों की तुलना में उतनी मजबूत नहीं हुई है। उसे आज भी वह स्थान प्राप्त नहीं हो पाया है जो स्थान इस समाज ने पुरूशों को दिया है। आज भी दूसरी बेटी होने पर परिवार के लोग समाज के लिए दया के पात्र बन जाते हैं, उन्हें समाज की सहानुभूति झेलनी पड़ती है। वहीं दूसरी, तीसरी और चौथी संतान भी यदि बेटा हो तो परिवार वालों का सीना गर्व स चौड़ा हो जाता है। समाज में भी उनकी इज्ज़त बढ़ जाती है। उस माता–पिता को भी अक्सर सुनने में मिलता है ''अरे आपको क्या चिन्ता है, आपके तो चार–चार बेटे हैं''। इसका तो यही अर्थ है न कि आज भी बेटियों को बोझ और बेटों को बुढ़ापे का सहारा समझा जाता है। चाहे भले ही बेटा बाद मे सपूत के बदले कपूत ही निकल जाए और बुढ़ापे में माँ–बाप को सहारा देने के बजाय उनके जीने का बचा–खुचा सहारा भी छीन ले। इसका उदाहरण हम अखबारों में अक्सर पढ़ते रहते हैं।

यहाँ मैं एक बात स्पश्ट करना चाहूंगी कि मैं सिर्फ और सिफ मध्यम वर्गीय समाज की नारियों की बात कर रही हूँ जो हमेषा से उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग के बीच पिसती रही हैं और समाज में स्वयं को स्थापित करने के लिए लड़ती रही हैं।

यह बात सही है कि षिक्षा ने नारी की स्थिति को सुधारने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। इसी को बदौलत मध्यम वर्गीय भारतीय नारी ने स्वयं के लिए समाज में स्थान बनाया है। वरना नारी की स्थिति कैसी होती इसका आप स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं।

मरा स्वयं का मानना है कि भारतीय पुरूश इसके लिए पूर्ण रूप से दोशी नहीं है नारी भी बराबर की दोशी है। नारी ने स्वयं को पुरूशों के हाथ की कठपुतली क्यों बना लिया है समझ में नहीं आता। जबकि उसे षक्ति का प्रतीक माना गया है, विद्या की, धन की देवी माना गया है। यह भी माना जाता है कि नारी में सहनषीलता

पुरूशों की तुलना में बहुत अधिक है। नारी चाहे तो क्या नहीं कर सकतो। जहाँ अंतरिक्ष तक पहुँच जाने से लेकर दफ्तरों, बहुराश्ट्रीय कम्पनियों, विष्वविद्यालयों आदि के भी उच्च पदों पर स्वयं को स्थापित करने के साथ–साथ साबित भी किया है वहीं, पुरूशों का आधिपत्य समझे जाने वाले जगहों जैसे पेट्रोल पंपो, कंडक्टरी, सिटी बस ड्राइविंग, बाक्सिंग, भारोत्तोलन आदि में भी अपनी बहुत अच्छी पहुँच बना ली है। फिर नारी पुरूशों से कहाँ कम है। जरूरत है तो बस नारी एकता की, थोड़ी और समझदारी की एवं अपने अन्दर के स्वाभिमान, आत्मसम्मान को जगाने की।

कहा भी जाता है ''नारी ही नारी की दुष्मन है'' आर कई मायने में यह सच भी है। माँ यदि स्वयं को मजबूत कर ले या ठान ले तो कभी भी कन्या भ्रूण हत्या नहीं होगी, कोई नवजात कन्या/बेटी कूड़े में, रेलवे ट्रैक पर, अस्पतालों आदि में भगवान भरोसे नहीं छोड़ी जाएगी। पढ़ने लिखने का मौका भी उसे अपने भाईयों के बराबर ही मिले इसके लिए भी माँ, दादी, नानी, बुआ, मौसी वगैरह को आगे बढ़कर हिम्मत दिखानी होगी। 'क्या करेगी पढ़ लिखकर दूसरे घर ही तो जाना है'– वाली सोच, घर की महिलाओं को बदलनी होगी।

यहाँ से होने वाली षुरूआत घर की बहुओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी लेने के साथ आगे बढ़ेगी। किसी भी बहू के ससुराल में उसकी सास, ननद या जेठानी आदि सच्चे मन से उस बहू का उसके हर सही कदम पर साथ देने को दृढ़ संकल्प हो जाये तो ससुराल में बहुएं प्रताड़ित नहीं हो सकंगी, उन्हें दहेज के लिए जलाया नहीं जा सकेगा। पर अफसास है कि हम नारी ही दूसरी नारी को पुरूशों के द्वारा सताये जाने पर मन ही मन खुष होती हैं। कई बार ता हम स्वयं भी इसमें षामिल होती हैं।

विवाहेत्तर सम्बन्ध भी इसका एक अच्छा उदाहरण है जहाँ एक औरत की वजह से ही दूसरी औरत का घर उजड़ जाता है। एक औरत क्यों नहीं ये सोचतो है कि जो मर्द/पुरूश अपनी पत्नी, जो सिर्फ और सिर्फ उसकी खातिर अपने माँ–बाप, भाई–बहन को छोड़कर उसके ही विष्वास के सहारे ससुराल चली आयी है, का विष्वास तोड़ सकता है उसके प्रति ईमानदार नहीं हो सकता है तो क्या वो मेरे पति ईमानदार होगा, मेरा विष्वासपात्र बनने के काबिल है? मैं 'लव–मैरिज' को गलत नहीं मानती ह्ं पर बिना किसी का घर बर्बाद किए। किसी षादीषुदा से 'लव–मैरिज' करने

को सोचना भी गलत है। बहुओं की सुरक्षा व संरक्षा की जिम्मेदारी यदि सास की है तो वहीं उनके बुढ़ापे में यही जिम्मेदारी बहू की हो जाती है। बहू अपनी जिम्मेदारी को सही ढंग से समझकर उस पर अमल करे तो कभी भी किसी बूढ़ी सास के लिए वृद्धाश्रम की आवष्यकता नहीं पड़ेगी। कोई महिला बुढ़ापे में अपने ही घर से बेघर नहीं होगी।

आजकल लड़कियां फिल्मों की नकल कुछ ज्यादा ही करना चाहती हैं। वो वसी ही ड्रेस पहनना चाहती हैं जैसी कि फिल्म की हिरोइन ने पहनी होती है। अतः फिल्मों में काम करने वाली या काम करने की चाह रखने वाली प्रत्येक महिला यदि यह प्रण कर ल कि वह आधे–अधूरे कपड़े पहनकर अपना षारीरिक प्रदर्षन नहीं करेगी, पष्चिमी देषों को नकल न करके अपने देष की सभ्यता–संस्कृति को अपनायेगी तो कोई उन्हें जबरदस्ती इसके लिए मजबूर नहीं कर सकेगा। ठीक है षुरू में बहुत दिक्कतें आयेंगी षायद फिल्मों में काम भी न मिले। तो कोई बात नहीं, फिल्मों में न सही कोई और ही काम किया जा सकता है। बहुत सारे ऐसे काम हैं जहाँ हमें मान–सम्मान भी मिलेगा और पैसा भी।

हमें यह समझना होगा कि 'समाज' से तात्पर्य सिर्फ पुरूशों से नहीं है बल्कि पुरूश व महिला दोनों ही समाज का अहम हिस्सा है। दोनों में से किसी एक के बिना समाज अधूरा है।

हर नारी यदि प्रण कर ले कि वो मर्दों के हाथ की कठपुतली नहीं बनेगी, वो वही करेगी, जिससे उसकी खुद की ही नहीं बल्कि पूरी नारी जाति की प्रतिश्ठा बढ़ती हो तो समाज खुद–ब–खुद नारी का सम्मान करने लगेगा जो आज सिफ कागज़ों में व हमारे विचारों में ही कैद होकर रह गया है। वास्तविकता इन सबसे बहुत दूर है जो हम सभी जानते हैं। जिस दिन से ऐसा होने लगेगा समाज की तस्वीर कुछ और ही नज़र आयेगी। तब वास्तव में एक सभ्य समाज का विकास होने लगेगा जिसकी इस देष को आवष्यकता है।

अधूरी अदा

सत्यभामा पाण्डेय

षब्दों से यूँ दिल के टुकड़े करने वाली
साचो कैसे दिल के दाग वो धोता होगा
तन्हाई में चुपके–चुपके वह भी तो रोता होगा
जिस्म की डोर बंधी है जाँ से
जाँ की डोर बंधी है तुमसे
फिर चैन जिया का वह भी तो खोता होगा
तन्हाई में चुपके.....
नींद नहीं आती है तुमको म भी जानू तू भी जानें
बेखुदी के इस आलम में वह भी कैसे सोता होगा
तन्हाई में चुपके.....
रोती हो तुम क्या सोचकर कि वह खुष होगा
वह भी तो रातों में अष्कों की लड़ियाँ पिरोता होगा
तन्हाई में चुपके.....
ख्वाब नहीं आखों में अब कोई भी षेश बचे
सोचो कैसे वह अपने अस्थि पंजर ढोता होगा
तन्हाई में चुपके.....
तुम क्या जानों क्या–क्या बीती ह इस मधुकर पर
फिर मधुबन से मिलने के कैसे वह सपने संजोता होगा
तन्हाई में चुपके.....
तुम बिन जीने की सोचूँ भी तो कैसे
सोच कि तुम बिन जीने की सोच मेरा क्या होता होगा
तन्हाई में चुपके.....

पत्नी–अष्विनी कुमार पाण्डेय
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

बदलता समाज

अलका श्रीवास्तव

हम लोग अक्सर यह कहते सुनते हैं कि समय कितना बदल गया है। समय के साथ–साथ पूरा समाज ही बदल गया है। रिष्ते–नाते, ईमानदारी, सेवा सबका अर्थ बदल गया है। आदमी के साथ–साथ उसकी भावनाओं का भी मषीनीकरण हो गया है। मां–बेटे, पति–पत्नी, दोस्त–मित्र के बीच में स्नेह, कर्तव्य व जिम्मेदारियों का अभाव देखा जाना आम बात है। क्या हमने कभी इसके पीछे के कारणों को जानने व समझने की कोषिष की? आज हर षख्स इस सामाजिक बदलाव की जिम्मेदारी नेताओं, अपराधियों या सरकार पर डाल देता है। पर षायद वह यह नहीं सोचता कि जिस समाज की वह आलोचना करता है वह उसका अपना समाज है और वह उसका एक महत्वपूर्ण अंग है। हमें पुराना समय या इतिहास इसलिये अच्छा लगता है क्योंकि उस समय का समाज एक छोटे स्थल से और हर व्यक्ति से षुरू होता था। वहां हर कोई किसी न किसी तरह से अपनी जिम्मेदारियों से जुड़ा रहता था। पहले घर फिर गांव, फिर षहर व फिर पूरे राज्य व देष का सम्मान होता था। पहले नैतिकता की पाठषाला घर व गांव ह्आ करते थे। क्या हम आज भी वह सोच रखते हैं ? षायद नहीं। पहले हमारी षिक्षा धर्म व नैतिकता की थी। अतः समाज का स्वरूप उसी अनुसार प्रतीत होता था। किन्तु आज हमारी षिक्षा पैसे व विलासिता को रखकर की गई है। उदाहरण के तौर पर मां–बाप अपने पुत्र को बाल्यकाल से उच्च षिक्षा, अच्छे पद व नाम हेतु अपने से दूर भेज देते हैं, और जब वह बड़ा हो जाता है तो वह विदेष जा बसता है तो फिर वह समाज पर दोशारोपण करते हैं। उसके अन्दर आन्तरिक स्नेह की भावना जब पनपी ही नहीं तो वह उसे निभायेगा कैसे। इसी तरह जब हम खुद ही भावी समाज के बच्चों के आगे भावनात्मक, सेवारत, कर्तव्य–परायण न बन सकें तो फिर उनके द्वारा परिवर्तित समाज व सोच को क्यों कोसें। आज अगर हर षख्स सिर्फ अपने को सही राह पर रखे तो यह समाज खुद–ब–खुद अच्छा हो जायेगा और जिस सुख से हम वंचित है या जिसकी चिन्ता हमें आगे आने वाले समय के लिए सता रही है वह खुद–ब–खुद सुनहरा व सुखमय हो जायेगा। तब न कोई गैर और न कोई सरकार बल्कि हम खुद समाज के दर्पण होंग।

पत्नी – प्रवीण कुमार श्रीवास्तव

लेखापरीक्षक

सच्चा मित्र

प्रवीण कुमार श्रीवास्तव
लेखापरीक्षक

बात उन दिनों की है जब मैं एयरफोर्स में था। सन् 1992 में मेरा ट्रांसफर बम्बई हुआ था। नई जगह आने पर कई नये दोस्त भी बनने स्वाभाविक थे। हमारा ऑफिस बाम्बे वो.टी. स्टेषन के पास ही था। वहाँ से कुछ दूरी पर स्टॉक एक्सचेंज का ऑफिस व स्टॉक मार्केट आसपास होने की वजह से मुझे भी षेयर ट्रेडिंग का षौक हो गया, धीरे–धीरे मैं इसमें पूरी तरह लिप्त हो गया। मुझे सारे लोग जानने लगे। कुछ मित्र व जानने वाले अपने पैसों को मेरे मार्फत षेयर में लगाने लगे। समय के साथ–साथ मैं इसमे बढ़ता ही गया। तभी एकाएक हर्शद मेहता कांड की बदली छायी और मैं पूरी तरह बर्बाद हो गया। जानने वाले व मित्रगण अपने पैसां की वापसी हेतु दबाव डालने लगे। तभी मेरा ट्रांसफर दिल्ली हो गया। मेरे ऊपर पैसे वापसी का दबाव और बढ़ने लगा। मरे पैसे रिटर्न करने के भरोसे के बावजूद मित्र साथ छोड़ने लगे। दो–तीन मित्रां को छोड़कर मैने किसी तरह सबका पैसा वापस किया और बाकी लोगों को बाद में देने का वायदा किया। एक मित्र (राघव) जिसका ट्रांसफर जम्मू हो गया था, को छोड़कर मैंने सबका पैसा कुछ समय के अंदर ही वापस कर दिया। एक दिन जब मैं ऑफिस से घर लौटा तो मिसेज ने बतलाया कि आपके मित्र राघव का फोन, एक हॉस्पिटल से आया था कि मैं कुछ पैसों का इंतजाम कर लूँ, जरूरत पड़ सकती है। मैं अगले ही दिन किसी तरह उसके पैसों का इंतजाम कर हॉस्पिटल पहुँच गया। वहाँ पहुँचने पर पाया कि उसके पिताजी की किडनी खराब हो गयी है, वे जिंदगी की आखिरी लड़ाई लड़ रहे हैं। मैंने जब अफसोस जताते हुए पैसे देने की कोषिष की तो मित्र ने बड़ी विनम्रता से कहा कि मैंने पैसों का इंतजाम इमरजेन्सी के लिए करने को कहा था, लाने के लिए नहीं। फिर भी बड़ी

मुष्किल से मैंने उसे यह कहकर दिये कि तुम्हारे ही पैसे अगर तुम्हारे पिताजी के काम न आये तो फिर क्या फायदा।

उसी महीने एकाएक हमारी छोटी बहन की षादी पड़ गयी। पिताजी पहले ही रिटायर थे, मैं भी आर्थिक तंगी में था। किन्तु किसी तरह पैसों का इंतजाम कर जिम्मेदारी तो पूरी करनी ही थी। मैंने षादी का निमंत्रण अपने उस मित्र को भी भेजा। षादी सम्पन्न हो गई। हालांकि मेरा मित्र उसमें षरीक नहीं हुआ। मैंने भी सोचा कि इतनी दूर कौन आता। एकाएक षादी के 10–12 दिनों बाद मेरे मित्र का फोन आया। हाल–चाल लेने के बाद उसने अपने न आने की माफी माँगी। मैंने भी कहा कोई बात नही। किन्तु उसके अगले वाक्यों ने मुझे एकदम हतप्रभ कर दिया। उसने कहा, ''मुझे दुःख व षर्मिन्दगी है कि मैं आपके पैसे समय पर, यानि षादी के समय न भेज सका क्योंकि उन दिनों ही मेरे पिताजी का देहान्त हो गया था, और मैं जानता हूँ आपने अपनी जिम्मेदारियाँ कितने कश्ट से उठाई होंगी।'' मेरे मुँह से अनायास निकल पड़ा, ''वाह रे मित्र! इतनी जटिल परिस्थितियों में भी तू एक मित्र की परेषानियों के बारे में सोच रहा था।'' फिर मैंने पूछा कि तुम किन पैसों की बात कर रहे हो ? मैंने तुम्हारा ही पैसा हॉस्पिटल में वापस किया था, तो मेरा कैसा। तब उसने कहा, जो पैसा उसने निवेष के लिए दिया था उसमें उसका भी स्वार्थ था, साथ ही उसमें तुम्हारा भी नुकसान हुआ। मुझे अपने दोस्त पर पूर्ण भरोसा है। सही समय पर (हॉस्पिटल) मदद हमेषा एक कज रहता है और वह इस कर्ज को उतारने में असफल रहा है। इस घटना ने हमारे दिल को कुछ इस कदर प्रभावित किया कि हमारी दोस्ती एक अटूट बंधन में बंध गई और इसकी सुगंध आज भी कायम है।

जीने की रीत

राकेश रंजन
डाटा एन्ट्री
ऑपरेटर

अचानक मेरे मन में यह ख्याल आया,

आज हर जगह कोहराम है क्यों छाया?

इसकी वजह षायद, घटती इंसानियत है,

ईष्वर को यही जताने की चाहत है।

उन्नति करनी हो तो पहले इंसान बनें,

ऊपर बढ़ने के लिए सत्य का ही मार्ग चुनें।

एकता के बल पर साथ–साथ चलें,

ऐतिहासिक परिवर्तन की नींव डालें।

ओझल हो नजर से आतंकवाद,

औद्योगिकरण से हो यह जग आबाद।

अंत में सत्य की जीत निष्चित है,

अंततः – यही जीवन की रीत है।

(चाहे कोई भी परिस्थिति हो, जीने की रीत को हमेषा जगाए रखें)

प्रकृति तथा जीवन

अषोक कुमार
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

पृथ्वी पर चारों ओर जिधर भी देखिये, वहीं जीवन की चहल–पहल दिखाइ देती है। हमें अपने चारों ओर हरी–भरी धरती तथा विभिन्न जीव–जन्तु दिखाई देते हैं। आखिर पृथ्वी ग्रह में ऐसा क्या है कि यहीं पर जीवन है–जबकि ब्रह्मांड खरबों तारों और ग्रहों से भरा है। क्यों धरती एक जीवंत ग्रह है जबकि वैज्ञानिक लाखों ग्रहों का अध्ययन कर चुके हैं, परन्तु उन्हें कहीं और जीवन का कोई संकेत अभो तक नहीं मिला है। आइये देखते हैं कि पृथ्वी में ऐसा क्या है कि यहां पर जीवन के लिए आवष्यक परिस्थितियाँ मौजूद हैं।

सबसे पहले सौर मंडल तथा पृथ्वी की सौर मंडल में स्थिति देखें। सूर्य पृथ्वी से इतना दूर है कि उसकी ऊर्जा धरती पर जीवन को उत्पन्न करके उसे बनाए रखती है। सूर्य की गरमी से समुद्रों का पानी वाश्प बनकर, वर्शा कर, धरती को सींचता है। यह जल हर प्राणी के लिए आवष्यक है। यदि सूर्य अधिक दूर होता तो भी धरती अत्यधिक ठंड के कारण एक निजीव ग्रह बन जाती। यदि धरती का द्रव्यमान बहुत कम होता तो इसका गुरूत्वाकर्शण बल बहुत ही कम होता जिससे यहां वायुमण्डल नहीं होता। वायुमण्डल में उपस्थित कार्बन डाई–आक्साइड, मोथेन आदि गैसें तथा जलवाश्प सूर्य की गरमी को सोखकर वायुमण्डल के तापमान को एक समान बनाये रखकर धरती को रात में अत्यधिक ठंडा होने से बचाते हैं। वायुमंडल में उपस्थित ओजोन जो कि एक जहरीली गैस है, खतरनाक अल्ट्रावॉयलेट विकिरण से जीवन को बचाती है। पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र सूर्य से आने वाले खतरनाक विकिरण, जो कि धरती से जीवन को समाप्त कर देने मं सक्षम है, को ध्रुवों की तरफ मोडकर यहां जीवन को बचाते हैं। हम धूल से परेषान हो जाते हैं पर यही धूल के बारीक कण तथा ज्वालामुखियों की राख जब वायुमण्डल में जाकर फैल जाती है तथा इसपर जलवाश्प संघनित होकर ही बादल बनते हैं और वर्शा होती है। पृथ्वो अपनी धुरी पर 23.5 डिग्री झुकी है जिस कारण हमें विभिन्न मौसमों का आनंद मिलता है। साथ ही

यह अपने अक्ष पर 24 घन्टे में एक चक्कर लगाती है जिसके कारण दिन–रात होते हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो पृथ्वी के एक हिस्से में सदैव दिन होता ओर दूसरा हिस्सा हमेषा अन्धकारमय होता।

सूर्य की गरमी से ऊर्जा पाकर उत्पन्न होने वाले, वायुमण्डल में आने वाले तूफान भी जीवन के लिए आवष्यक हैं। ये वायुमण्डल के तापमान को वितरित कर नियन्त्रित करते हैं। पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह चन्द्रमा अपने गुरूत्व से ज्वार उत्पन्न करता है जोकि महासागरों को लगातार मथकर जीवन को चलायमान रखते हैं। तापांतरण के कारण समुद्री जल में उत्पन्न होने वाली गर्म तथा ठंडी जलधाराएं भी धरती पर तापमान को वितरित करतीं हैं। इस तरह ये तूफान, ज्वार–भाटे तथा समुद्री जलधाराएं किसी प्राणी के षरीर में रक्त के प्रवाह के समान पृथ्वो को जीवंत ग्रह बनाते हैं।

धरती के आरंभिक वातावरण में कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन आदि तत्व विभिन्न यौगिकों के रूप में मौजूद थे। इन्हीं तत्वों से प्रत्येक प्राणी के षरीर का निर्माण हुआ है। पेड़–पौधे, वातावरण तथा धरती से इन तत्वों को गहण कर भोजन बनाते हैं जिसे षाकाहारी प्राणी खाते हैं। यदि षाकाहारी प्राणी नहीं होते तो धरती पर केवल पेड़–पौधे ही होते। इसी प्रकार यदि षाकाहारी प्राणियों को आहार बनाने वाले मांसाहारी प्राणी नहीं होते तो षाकाहारी प्राणी धरती से सब पेड़–पौधों को खा जाते और खुद भी भूख से मर जाते। इस प्रकार प्रकृति ने जीवों की संख्या को नियन्त्रित किया है।

जब किसी प्राणी की मृत्यु होती है तो बैक्टीरिया, कवक जैसे सूक्ष्म जीव उस प्राणी के षरीर को विघटित कर उसके षरीर के तत्वों को फिर से वातावरण और भ्मि पर पंहुचा देते हैं जिन्हें पेड़–पौधे ग्रहण करके फिर से उपयोग कर लेते हैं। मृत वृक्षों को भी दीमक खाकर फिर से उनके तत्वों को वातावरण में पहुंचा कर, इन तत्वों को पुनचक्रित करने में सहायता देती ह। इस तरह कुछ भी प्रकृति में व्यर्थ नहीं जाता है और सभी पदार्थ फिर से किसी दूसरे जीव के काम आ जाते हैं। यदि हम कहें तो ऐसा भी हो सकता है कि किसी व्यक्ति की नाक जिन अणुओं से बनी हो वे पहले

किसी ओर जीव के षरीर में रहें हो या किसी आदमी के पेट में वही अणु हो जो करोड़ों वर्श पहले किसी डायनासोर या किसी कीट के षरीर में रहे हों।

हमारे सौर मंडल में बृहस्पति तथा षनि जैसे भारी–भरकम ग्रह मौजूद हैं। ये पृथ्वी की ओर आने वाले धूमकेतुओं तथा बड़े–बड़े अन्य पिडों को अपनी ओर आकर्शित कर लेते हैं, नहीं तो ये पृथ्वी से टकराकर यहां जीवन का अन्त कर सकते हैं। फिर भी यदि कोई ऐसा पिण्ड पृथ्वी की ओर आता है तो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेष करने पर वह घर्शण के कारण जल जाता है। करोड़ों वर्श पहले ऐसे ही एक टक्कर से डायनासोरों का अन्त हो गया था। यदि उनका अन्त न होता तो षायद मानव जाति इस धरतो पर उत्पन्न नहीं हो पाती।

इस तरह हम देख सकते हैं कि पृथ्वी पर जीवन के लिए बहुत से कारकों की आवष्यकता होती है। सभी कारक एक दूसरे से जुड़े हैं। वास्तव में जीवन केवल संतुलन का ही दूसरा नाम है। प्रत्येक जीव तथा वस्तु जीवन को बनाए रखने के लिए आवष्यक है। प्रकृति में हर प्राणी की अहमियत है परन्तु मनुश्य अपने लालच के कारण प्रकृति को नश्ट करने पर तुला हुआ है। लेकिन जीवन का ताना–बाना ऐसा है कि किसी एक जगह यदि कुछ परिवर्तन होता है तो उसका प्रभाव दूसरी जगह पर भी पड़ता है। जैसे कि गिद्धों की संख्या में कुछ समय से बहुत कमी आई है जिससे कि जानवरों के सड़े–गले षवों के निस्तारण की समस्या सामने आ रही है। मोबाइल टावरों से उत्सर्जित विकिरण के कारण मधुमक्खियों के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। यदि प्रकृति से मधुमक्खियां तथा तितली जैसे, पौधों का परागण करने वाले जीव समाप्त हो गए तो, वैज्ञानिकों का अनुमान है कि संसार में उपलब्ध समस्त खाद्यान्न तीन या चार वर्श में ही खत्म हो जायेगा जिससे कि मानव जाति भूखों मर जाएगी। प्रकृति में कोई भी जीव अनुपयोगी नहीं है। छोटे से छोटे जीव का भी अपना महत्व है। अतः मनुश्य को प्रकृति के साथ जरूरत से ज्यादा छेड़खानी करने से बचना चाहिए नहीं तो धरती से मनुश्य जाति का भी अंत हो सकता है।

और रावण मारा गया

महेन्द्र तिवारी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

और रावण मारा गया
रावण कौन था
रावण कैसा था
कोई नहीं जानता।
षायद हम जैसा इन्सान था
ये कोई नहीं मानता
क्या अपराध था रावण का
ऐसा क्या किया था रावण ने
जितने लोग उतनी बातें
फिर भी नहीं चाहते
रावण की सांसे।
क्या कसूर था रावण का
उसका कसूर यही था कि
अपनी बहन का बदला लेने गया
वह एक सच्चा भाई था
वह जानता था कि अंजाम क्या होगा, फिर भी गया
राम ने सच्चे पति का धर्म निभाया
लक्ष्मण ने अच्छे भाई का कर्म दिखाया
पूरा समाज बन्दरों की तरह साथ था
जैसे उनकी पत्नियों पर भी रावण का हाथ था
तब से आज तक
रावण को मारते हैं
उसका पुतला बनाते हैं
और अपने खानदान सहित

उसके पूरे खानदान को जलाते हैं
खुषियां मनाते हैं, मगर भूल जाते हैं कि
रावण के पास बीस आंखे थीं
और नजर सिर्फ सीता पर थी
आज हमारे पास दो आंखे हैं,
और नजर हर औरत पर
बन्दरों का समाज इन्सानों का हो गया,
और सीताओं को बचाना मुष्किल हो गया।
क्योंकि रावण मारा गया।
,,,,,,,,

इण्डिया हमारी कन्ट्रो

अनन्या सिंह चन्देल

इण्डिया हमारी कन्ट्री है, और हम इण्डिया के सिटिज़न, इसीलिए हिन्दी बोलना हमारी ड्यूटी है। पर बेचारी हिन्दी की किस्मत फूटी है। यंग जनरेषन ह्वेनएवर माउथ खोलती है ओनली एण्ड ओनली इंग्लिष बोलती है। जब पर्सन की एबिलिटी इंग्लिष से तोली जाती है तब हमारी गर्दन संकोच से झुक जाती है एण्ड हार्ट डीप वेदना से भर जाता है। यह बिल्कुल रॉन्ग है। हमें अपनी डेली लाइफ में हिन्दी लैंग्विज् को लाना है इसे वर्ल्ड वाइड फैलाना है।

सपुत्री–बी.एस. चन्देल
लेखापरीक्षा अधिकारी

गरीब माँ

मानसी जैन
लेखापरीक्षक

बेबस और लाचार सी
वो माँ थी अकेली
जिसके आगे था कोरा सा जीवन
और मासूम सी औलाद .....
कसे खिलेगा उसका गुलषन
और महकेगा उसका गुलिस्ताँ,
वो रो पड़ती थी
इतना सोचने के बाद .....
जमाने से मिले थे धोखे,
छोड़ दिया था सबने
एक बेटे के अलावा
बची क्या थी जायदाद .....
धीरे–धीरे वक्त गुजरा,
बेटा बड़ा होने लगा
माँ को भी लगने लगा
होगा अब गुलषन आबाद ....
वो जानता था खाली बरतन
बिना बिजली का घर
इन सब बातों को
जब भी वो करता था याद ....
सोचता और जानता कि
आँसू सारे पोंछेगा माँ के
और पूरी करेगा वो जो
वक्त की मार से माँ की
अधूरी थी हर मुराद
सुनकर उसके दिल की बातें
फफक कर रो पड़ा,
माँ का दिल
इसके सीने से लग के
और भी आ गई थी
उसके करीब माँ
और मन ही मन वो
मुस्कुरा उठी
क्योंकि अब नहीं रही थी
वो 'गरीब माँ'

भारतवर्श संघर्श गाथा

अष्विनी कुमार पाण्डेय
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

कारवाँ तूफानों में भी हमारे चलते रहे,
ख्वाब गर्दिष में भी हमारी आँखों में पलते रहे।
आज आसमां से ऊपर बना ली हमने दुनिया अपनी,
यही देख कर जमाने वाले हमसे जलते रहे।
हमने सोचा भी न था वो भी दगा कर गए,
पर राह अपनी बनाकर हम चलते रहे।
लाख सोचा सबने कि रूक जायें हम थककर,
लेकिन जमाने के आगे हम निकलते रहे।
देखी जब दुनिया ने चमक हमारी षान की,
माथे पर परेषानियाँ थीं और हाथ मलते रहे।
माना घर हमारे भी, आती है रात रोज ही,
पर सूरज उनके घरों के भी तो ढलते रहे।
देखकर जोष हमारे फौलादी इरादों का,
मुष्किलें भी खुद अपने रास्ते बदलती रहीं।
जब से चढ़ने लगे हम रोज नई बुलंदियों पर,
दिल ही दिल में सब हमसे जलते रहे।
सच्चे वीर हैं हम, भारती के पुत्र हैं,
राह में गिरते रहे, खुद सम्भलते रहे,
जब भी आयी बात अपनी अस्मित की तो
सिंह बनकर दहाड़ा, दुष्मन दहलते रहे।

माँ की याद

प्रवीण कुमार श्रीवास्तव
लेखापरीक्षक

माँ तुम याद बहुत ही आती
जब मैं छोटा बच्चा था, तू आंचल में लिपटाए रहती।
मैं चैन की नींद सोता, तू लोरी सुनाती रहती।। माँ तुम.....

मैं पालने में झूलता रहता, तू काम में जब लिप्त रहती।
रोने की हल्की आहट पे, तू दौड़ी चली आती।। माँ तुम.....

मैं भूखा न रहूँ, दूध की षीषी, हरदम भर जाया करती।
अपनी चाय की केतली फिर, नीबू संग गरमाती।। माँ तुम....

मेरे तख्त से गिरने पर, तू अश्रु समुन्दर हो जाती।
मेरे स्याह पड़े चेहरे पर, तू ममता चुंबन बरसाती।। माँ तुम....

घुटनों से पैरों पर चलने तक, तू अक्सर बैसाखी बन जाती।
नज़र किसी की लगे ना, तू काजल का टीका माथे लगाती।। माँ तुम....

तू पढ़ी–लिखी नहीं थी माँ, फिर भी मुझको पढ़ाती।
ए बी सी डी नहीं सही, क ख ग ही सिखलाती।। माँ तुम.....

रामायण–गीता का पाठ, सूर–कबीर की बानी सुनाती।
संस्कारों की वो गूढ़ षिक्षा, तू ही तो समझाती।। माँ तुम.....

मेरे हर बाल अपराध पर, तू क्षमा की देवी बन जाती।
सदा सलामत मैं रहूं, तू दुआ की थैली बन जाती। माँ तुम.....

मेरे सपनों की खातिर, तू त्याग की मूरत बन जाती।
मेरी खुषियों की खातिर, तू अपने दर्द छिपाती।। माँ तुम....
मुझे इन्सान बनाने में, तेरी आदर्ष ही प्रेरणा बन जाती।
उत्तर की अडिगता (हिमालय) व दक्षिण की सुन्दरता (कन्याकुमारी), तेरी छवि दर्षाती।।
माँ तुम....

जब सरहद पर आती आंच, माँ तू चौखट तक आती।
फर्ज से विचलित न हो जाऊं, तू भाव कमल चेहरे पे लाती। माँ तुम.....

भारत माता की लाज बचाने में, तू षहीद की माँ कहलाती।
धन्य हो माँ उस भारत की, जो षहीद की माँ कहलाती।
वन्दन हो उस देवी का, जो षहीद की माँ कहलाती।
नत मस्तक हूँ तेरे चरणों में माँ, तू याद बहुत ही आती।। माँ तुम.....

भारत–एक नज़र

अष्विनी कुमार पाण्डेय
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

हमें आज भी जो गीत सबसे अधिक रोमांचित कर देते हैं, और अपने राश्ट्र के प्रति समर्पण और बलिदान की भावना को मन में उत्प्रेरित कर देते ह, जिनके वषीभूत होकर हजारों लोग अपनी मातृभूमि पर प्राण न्योछावर करने के लिए तैयार रहते हैं, उनमें से एक है सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा। परन्तु हमारा राश्ट्र हमारा देष, हमारी मातृभूमि है, जिसे अच्छी तरह जानना चाहिए। भारत से जुड़े कुछ रोचक तथ्य निम्नवत है–

- भारत जिसको संविधान में भारत गणराज्य के नाम से जाना जाता है, दक्षिणी एषिया महाद्वीप का एक देष है।
- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है।
- भारत में कुल 28 राज्य और 7 केन्द्रषासित प्रदेष ह।
- यह क्षेत्रफल की दृश्टि से विष्व का सातवाँ राश्ट्र है।
- भारत की वर्तमान जनसंख्या लगभग 1,21,01,93,422 है, तथा वर्तमान दषक (2001 से 2010) तक में जनसंख्या वृद्धि दर 1.76 प्रतिषत प्रतिवर्श रही।
- विष्व में जनसंख्या की दृश्टि से यह दूसरा सबसे बड़ा राश्ट्र है, परन्तु यह विष्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला गणराज्य है।
- भारत इण्डोमालया ईकोजोन में स्थित है, तथा इसमें तीन महत्वपूर्ण जैवविविधता वाले क्षेत्र ह।
- यह विष्व की सत्रहवीं बृहत जैवविविधता वाला देष है जिसमें विष्व के कुल 8.6 प्रतिषत स्तनधारी, 13.7 प्रतिषत पक्षी, 7.9 प्रतिषत सरीसृप, 6 प्रतिषत उभयचर, 12.2 प्रतिषत मत्स्य तथा सभी फूलों वाले पौधों का 6 प्रतिषत अवस्थित है।

- भारतीय अर्थव्यवस्था बाजार विनिमय दर के आधार पर विष्व की 11 वीं अर्थव्यवस्था है।
- क्रय षक्ति क्षमता के आधार पर यह विष्व की तीसरी अर्थव्यवस्था है।
- यह विष्व की सर्वाधिक तीव्र गति से विकसित होने वालो अर्थव्यवस्थाओं में से एक है।
- भारत में वर्तमान लिंगानुपात 940 महिलाएं प्रति हजार पुरूश है।
- भारत में मृत्यु दर 7.43 प्रति हजार है।
- भारत में प्रति जोवित षिषुओं के आधार पर षिषु मृत्युदर 46.07 प्रति हजार है।
- भारत में बेरोजगारी दर 9.8 प्रतिषत है।
- भारत में कक्षा पांच तक स्कूल छोड़ देने वाले छात्रों का प्रतिषत 10.64 है।
- भारत में साक्षरता दर 74.04 प्रतिषत है जिसमें महिलाओं की साक्षरता दर 65. 46 प्रतिषत एवं पुरूशों की साक्षरता दर 82.14 प्रतिषत है।
- भारत विष्व के 95 सबसे भ्रश्ट देषों में 11 वें स्थान पर है।
- भारत में कृशि योग्य भूमि का 35.12 प्रतिषत (वर्श 2009 में) सिंचित भूमि है।

''हमें उपर्युक्त में से कमियों को कम तथा खूबियों को संवृद्ध करने में अपना योगदान देना चाहिए।''

क्या हो तुम ?

अरूण कुमार चौधरी
वरिश्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी (सेवा निवृत्त)

चार दिन भी बीते नहीं,
मेरी स्मृति से भी मिटे नहीं,
चलने को तैयार हो तुम,
बता दो हमें क्या हो तुम?

चाँद की चाँदनी रात हो,
नवनीता की बारात हो,
कवियों की कल्पना हो तुम,
बता दो हमें क्या हो तुम?

बागों को नवजीवन देते हो,
अभागों का भाग जगाते हो,
डूबते हुए का किनारा हो तुम,
बता दो हमें क्या हो तुम?

मेरे जीवन की कथा हो,
मेरे उर की व्यथा हो,
बीती हुई बहार हो तुम,
बता दो हमें क्या हो तुम?

जिन्दगी

महावीर सिंह रावत
वरिश्ठ लेखाकार

जिन्दगी इक आइना है
बीते पलों का प्रतिबिम्ब
इसको निहार कर
कभी सिहर उठता
कभी प्रफुल्लित

कभी अश्रुधारा बह पड़ती
कभी उल्लास, उमंग
जिस पल में जी रहे
जिन्दगो का सार है
जिन्दगी का राग है
राग की आवाज है
कल किसने देखा

कैसा होगा आने वाला पल
जो पल चल रहा
उसका लो आनन्द
जिन्दगी इक आइना है
बीते पलों का प्रतिबिम्ब
बीते पलों में
कई हमसफर मिले
जो पल बीतने पर
हम से जुदा हो चले
निहार उनका प्रतिबिम्ब

दुःख का सैलाब उमड़ आता
क्यों उनकी यादों में
उस पल ये मन
व्याकुल हो उठता

जिन्दगी की यह हकीकत
कौन जाने किस पल
जग से हो जायें रूखसत
जिन्दगी इक आइना है
बीते पलों का प्रतिबिम्ब

आँसू

लक्ष्मी तिवारी

साथ छोड़ देते हैं
तब जब उनकी जरूरत है,
जब मन रोता है
आत्मा झकझोरती है,
अन्दर तक कुछ हिलता है
पर नहीं निकलता एक बूंद भी
वहीं पर दम तोड़ता है
विष्वास नहीं रहता अपने ऊपर
कि जो सबसे सहज है
विरल है पर नहीं बहता
आँखों से एक भी आँसू
निर्मम निर्मोही आँसू

पत्नी–महेन्द्र तिवारी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन में सत्संग की महत्ता

मीरा दुबे

सत्संग का षाब्दिक अर्थ है–सत् का संग अर्थात् सत्य का संग। सत्य अर्थात् ईष्वर, यानि ईष्वर का संग, ब्रह्म का संग, भगवान के सानिध्य में रहना। हर पल हर क्षण प्रभु की याद में निमग्न रहना। जिस प्रकार छोटे बच्चे का मन हमेषा अपने माता–पिता में लगा रहता है तथा उनके सानिध्य में वह अपने को सुरक्षित महसूस करता है; उसी प्रकार परमपिता परमेष्वर में मन को लगाना तथा उन्हीं को सर्वस्व अर्पण करना ही सत्संग है। कहा गया है ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या, अर्थात् ब्रह्म ही सत्य है तथा इसके अतिरिक्त यह सम्पूर्ण संसार केवल भ्रम मात्र है। ईष्वर ही विभिन्न रूपां में सम्पूर्ण जगत में व्याप्त है। यही कारण है कि ज्ञानी जन सबमें ईष्वर को देखते हैं तथा निर्विकार जीवन जीकर अन्त में मोक्ष को प्राप्त होते हैं, जो मनुश्य जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा संत समाज तथा सत्संग की तुलना चलते–फिरते तीर्थराज प्रयाग से की गयी है। प्रयाग को तीर्थों का राजा कहा गया है, क्योंकि वहाँ गंगा, यमुना तथा सरस्वती तीनों नदियों का संगम है। उक्त तीनों नदियों का स्थान हमारे धर्म ग्रन्थों में तीन देवियों के रूप में दिखाया गया है, जो अपने गुणों के कारण प्राणी मात्र के कल्याण में लगी रहती हैं। जहाँ गंगा जीवनदायिनी तथा मुक्तिदायिनी ह, वहीं रवि तनया यमुना, कलियुग के सम्पूर्ण क्लेषों का हरण करने वाली हैं तथा सरस्वती ज्ञान की देवी हैं। तीनों नदियों के संगम में स्नान करने तथा माघ मास में तीर्थराज प्रयाग में निवास करने तथा वहाँ के आध्यात्मिक वातावरण में प्रवास से जन्म–जन्मान्तर के क्लेषों का निवारण हो जाता है। ऐसी मान्यता है कि वहाँ का माहौल तथा आध्यात्मिक वातावरण, वहाँ उपस्थित जन–समुदाय के हृदय में व्याप्त दुर्गुणों को समाप्त कर सद्गुणों का संचार करता है। ठीक उसी प्रकार संत समाज द्वारा, ईष्वर भक्ति की जो सरिता बहायी जाती है, वह गंगा जी की धारा की तरह है। क्या कार्य करना चाहिए तथा क्या नहीं करना चाहिए, इस प्रकार का विचार जो संत समाज द्वारा सत्संग के माध्यम से उद्धृत किया जाता है, वह कलियुग की बुराईयों का नाष करने वाली यमुना जी की तरह है तथा संत समाज द्वारा जो ब्रहम ज्ञान की सरिता बहायी जाती है, वह ज्ञान की देवी सरस्वती के समान है। इस प्रकार सब मिलाकर संत समाज रूपी तीर्थराज प्रयाग स्थावर तीर्थराज प्रयाग के समान ही गुणों की खान है, जो मानव मात्र की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान कर उन्हें मनुश्यत्व से देवत्व की तरफ अग्रसर करता है। गोस्वामी जी ने लिखा हैः

मुद मंगल मय संत समाजू, जो जग जंगम तीरथ राजू।
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा, सर सइ ब्रहम विचार प्रचारा।।

आगे गोस्वामी जी कहते हैं कि संत समाज रूपी तीर्थ राज प्रयाग सभी को प्रत्येक स्थान पर, प्रत्येक दिन तथा बिना किसी व्यवधान के प्राप्त हो जाता है तथा उसके लिए किसी प्रकार के अतिरिक्त प्रयास की आवष्यकता नहीं पड़ती। केवल भाव ही भगवान को प्रिय है तथा उसी की प्रधानता होनी चाहिए। ईष्वराधीन होने का भाव ही

जीवन के सारे अभाव को हमेषा–हमेषा के लिए समाप्त कर देता है। अन्तमन का सुख सम्पूर्ण भौतिक सुखों से ध्यान को हटाकर, मन को एकाग्र कर, प्रभु में निमग्न कर देता है। सत्संग रूपी सर्व सुलभ साधन को केवल जीवन में अपनाने की आवष्यकता होती है।

संत समाज रूपी तीर्थराज प्रयाग अलौकिक और अकथनीय है एवं तत्काल फल देने वाला है। इसका प्रभाव प्रत्यक्ष तथा स्पश्ट रूप से परिलक्षित होता है। इसका नियमित सेवन करने से जीवन में आमूल–चूल परिवर्तन होता है तथा कौवा, कोयल एवं बगुला, हंस की तरह व्यवहार करने लगता है। अगस्त्य ऋशि घड़े से उत्पन्न हुए थे, नारद मुनि दासी पुत्र थे तथा बाल्मीकि लुटेरे थे परन्तु सत्संग ने इन तीनों महानुभावों के जीवन में आमूल–चूल परिवर्तन कर दिया। ये सभी सम्पूर्ण जगत में विख्यात हुए तथा अपने महान कर्मो के कारण देवत्व की श्रेणी में पंक्तिबद्ध हुए। गोस्वामी जी आगे भी कहते हैं कि बिना सत्संग के विवेक की प्राप्ति नहीं होती तथा बिना ईष्वर की कृपा के सत्संग की प्राप्ति भी नहीं होती है, साथ ही यह आनन्द एवं कल्याण का मूल मन्त्र भी है–

बिनु सत्संग बिबेक क न होइ, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।
सतसंगत मुद मंगल मूला, सोई फल सिधि सब साधन फूला।।

इस प्रकार सत्संग को सोचने की षक्ति तथा विवेक का मूल मन्त्र बताया गया है, जिसके नियमित संसर्ग में रहने से जीवन कामना रहित, इच्छा रहित तथा स्वार्थ रहित हो जाता है तथा उसके सभी कार्य ईष्वर प्रेरित तथा परमार्थ के लिए होने लगते हैं और सकाम स निश्काम कर्म की श्रेणी में आ जाते हैं, जिसके कारण किसी कार्य में फल की लिप्सा न होने से वह ईष्वरीय कार्य की श्रेणी में गिना जाने लगता है। इस प्रकार इसका निरन्तर सेवन करते रहने से व्यक्ति षरीर के बिना नश्ट हुए ही धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष, चारों फल प्राप्त कर लेता हैः

सुनि समुझहि जन मुदित मन मज्जहि अति अनुराग।
लहहिं चार फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग।।

अर्जुन ने गीता में भगवान कृश्ण से मोक्ष की प्राप्ति का जो उपाय जानना चाहा था उसके उत्तर में भगवान कृश्ण ने अर्जुन को मोह रहित तथा आसक्ति रूपी दोशों का त्याग कर, सुख – दुःख नामक द्वन्द्वों से उपराम हो तथा सभी कामनाओं का परित्याग कर नित्य–प्रति ईष्वर का ध्यान धारण करना ही इसका माध्यम बताया तथा इस पकार की वृत्ति रखने वाले ज्ञानी जन को ही मोक्ष का अधिकारी बताया, जो संसारिक आवागमन के बन्धनों से मुक्त होकर परमपिता परमेष्वर की सत्ता में समाहित हो जाते हैं, जो मनुश्य जीवन का परम लक्ष्य है–

निर्मान मोहा जितसङ्ग दोशा
अध्यात्म नित्या विनिवृत्त कामाः।
द्वन्द्वैविमुक्ताः सुख–दुःख सञ्ज्ञै–
र्गच्छन्त्य मूढ़ाः पदमव्ययं तत्।।

(श्रीमद्भागवत गीता)
(अध्याय 15 ष्लोक 5)

उपर्युक्त कथन षास्त्रोक्त उद्धरणों से प्रेरित हैं जो हमें इस मार्ग पर अग्रसर करता है, ताकि हम भौतिकता के अंधी दौड़ से कुछ समय निकाल कर चिन्तनषील बने तथा जीवन जीने की कला से परिचित हों। यह हम राह से भटके पथिक को सही मार्ग दिखाता है और जीवन जीन की कला सीखाता है। परमात्मा को हर जगह हाजिर–नाजिर जानकर सर्व में उसकी सत्ता को समझकर सभी प्राणियों में समदर्षी प्रभु का रूप देखना तथा उसके प्रति स्नेह तथा आदर का भाव रखना ही संत भाव है।

''जा घट प्रेम न संचरे वा घट जान मसान''

अर्थात् जिसके हृदय मे प्रेम नहीं है वह व्यक्ति मृतक के समान है। प्रेम का ही दूसरा रूप है क्षमा करना। छिद्रान्वेशण से विद्वश तथा नफरत का भाव उत्पन्न होता है। क्षमाषीलता जीवन में आनन्द एवं मधुरिमा का संचार करती है। हर एक को माफ़ करते चलें क्योंकि बदला लेने का सुख एक घड़ी का है और माफ़ करने का सुख अनन्त है। झुकना ज़िन्दादिली का नाम है, अकड़, मुर्दे की पहचान है। सत्संग से ही हम परमात्मा की मेहरबानियों को जान पाते हैं। जब हम परमात्मा का कार्य करते हैं तो वह हमारे सारे कार्य खुद करता है। कबीर दास ने कहा है–

कबिरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर,
पाछे लागा हरि फिरैं कहत कबीर–कबीर।

उपर्युक्त विशय गूढ़ है, पर इसका सेवन आसान है। इस कार्य में हमारी मदद ज्ञान मार्ग पर चलने वाले ज्ञानी जन करते हैं, जिन्हें हम संत समाज, सद्गुरू आदि अनेक नामों से पुकारते हैं। बिना गुरू के ज्ञान कठिन है। षिक्षा के लिए इच्छा के साथ–साथ कुषल मार्ग दर्षक की आवष्यकता पड़ती है।

गुरू बिनु भवनिधि तरई न कोई, जो विरंचि संकर समहोई।

अर्थात् देवताओं को भी गुरू बृहस्पति की आवष्यकता पड़ी तथा उनका सानिध्य स्वीकारना पड़ा। संत समाज की महिमा का गुणगान तथा उसके सानिध्य से लाभ को लिखने से मन नहीं भर सकता, इस के सम्बन्ध में जितना लिखा जाय उतना कम ही है। निचोड़ यह है कि अच्छी संगत मनुश्य को सन्मार्ग पर ले जाती है तथा जीवन का वास्तविक उद्देष्य पूर्ण होता है। इसके विपरीत कुसंग का ज्वर भयानक होता है, जो सभी भौतिक सुखों के बावजूद जीवन का कश्टमय बनाता है तथा सुख एवं षान्ति को समाप्त करता है। अतः –

संत दरस को जाइये, तज ममता, अभिमान।
पग–पग पर फल होत है, कोटिन यज्ञ समान।।

जीवन निर्मल बनेगा तथा स्थायी सुख एवं षान्ति की प्राप्ति होगी, इसमें दो राय नहीं है। अच्छा भोजन, अच्छी संगति तथा अच्छे विचार हमेषा लाभदायक होते हैं। षरषय्या पर लेटे भीश्म से ज्ञान की बातें सुनकर द्रौपदी ने प्रष्न किया– पितामह

उस समय यह ज्ञान कहाँ था जब मेरा चीर–हरण हो रहा था। तब पितामह ने समझाया कि दुर्योधन के अन्न के प्रभाव से मन प्रभावित था एवं उसी का परिणाम तुम्हारे सामने है। इस तरह की गूढ़ बातें मूढ़ मन में ज्ञान का संचार करती हैं तथा जीवन आनन्द से सराबोर हो जाता है। सत्संग में बतायी बातों को हृदयंगम करने तथा आचरण में उतारने से मनुश्य जीवन धन्य होता है तथा अन्त में मोक्ष की प्राप्ति होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

पत्नी–प्रभाकर दुबे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

क्या सुनूँ

संगीता जेटली
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

खुषियों की आवाज सुनूँ।
या दुःखों की फरियाद सुनूँ।।
बाग में खिलती कोमल कलियाँ
उनके खिलने की आषा सुनूँ।
या मुरझाए सूखे फूलों की,
सुन्दरता का ह्रास सुनूँ।।
या बेटे की राह को तकती,
माँ की अश्रुधार सुनूँ।।
यौवन में उन्मत बाला की,
पायल की झंकार सुनूँ।
या दूर जरूरत से पावन की,
वृद्धा की असकार सुनूँ।।
महलों में रहने वालों के,
सुखों का अट्टहास सुनूँ।
या गरीबी में अधलेटे,
मानव की भूख प्यास सुनूँ।
मेरे मन की चाहत खुषियाँ,
मन की मैं पुकार सुनूँ।
या डूब रहे दुख के सागर में,
हृदय की चीत्कार सुनूँ।।
खुषियों की आवाज सुनूँ।
या दुखों की फरियाद सुनूँ।।

आदर्ष पत्नी

संजना चौहान
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

एक अच्छी पत्नी कौन पा सकता है?
वह हीरे मोती से भी अधिक मूल्यवान होती है।
उसके पति का मन, उस पर पूरा भरोसा करता है।
वह जीवन भर उसका अनिश्ट नहीं, अपितु भला ही करती है।
वह सूरज उगने से पहले ही, मुँह अन्धेरे उठ जाती है,
और अपने परिवार के लिए भोजन का प्रबन्ध करती है।
वह कमर कसकर परिश्रम के लिए तैयार रहती है।
वह काम करने के लिए अपने हाथों को मजबूत करती है।
वह जानती है, कि घरेलू उद्योग में उसका लाभ है।
रात को उसका दीपक नहीं बुझता,
षक्ति और मर्यादा उसके वस्त्र हैं।
वह आने वाले कल को हँसकर उड़ा देती ह।
उसके मुँह से बुद्धि की बातें निकलती है।
उसके होठों पर सदा दया की सीख रहती है
वह गृहस्थी का सब काम, अच्छी तरह संभालती है।
वह आलस्य की रोटी नहीं खाती।
उसके बेटे और बेटियां, सोकर उठते हैं, उसके पैर छूते हैं।
जब उसका पति सोकर उठता है, वह भी उसकी प्रषंसा करता है।
ऐसी स्त्री का उसके परिश्रम के अनुरूप सम्मान करो।
सभा, पंचायत में उसकी प्रषंसा करो
वास्तव में जो स्त्री प्रभु का भय मानती है
वह प्रषंसा के योग्य है, पूजनीय है।

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते

रमन्त तत्र देवताः''

कभी न भूलो

ज्योति धवन
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

- हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

(स्वामी दयानन्द सरस्वती)

- मैं अपनी बात अपनी भाषा में कहूँगा। जिसको गरज होगी, वह सुनेगा। आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करोगे तो हिन्दी का दर्जा बढ़ेगा।

(महात्मा गांधी)

- भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले व्यक्ति ही सच्चे भारतीय बन्धु ह।

(महर्षि अरविन्द घोष)

- कोई देश विदेशी भाषा द्वारा न उन्नति कर सकता है और न अपनी भावना की अभिव्यक्ति ही कर सकता है।

(डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद)

- राजभाषा के रूप में हिन्दी देश की एकता में अधिक सहायक होगी। इस पर दो मत हो ही नहीं सकते ।

(पं0 जवाहर लाल नेहरू)

- हिन्दी के बिना हिन्दुस्तान अपने गौरव को प्राप्त नहीं कर सकता।

(राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन)

- जो भाषा हिन्दुस्तान के नगर, ग्राम तथा सर्वसाधारण में बोली जाए वह सिवाय हिन्दी के दूसरी हा ही नहीं सकती।

(पं0 बालकृष्ण भट्ट)

- हिन्दी जानने वाला आदमी सम्पूर्ण भारतवर्ष में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिन्दी बोलने वाले मनुष्य मिल सकते हैं। हिन्दी सीखने का कार्य

एक ऐसा त्याग है जिसे दक्षिण भारत के निवासियों को, राष्ट्र की एकता के हित में करना चाहिए।

(श्रीमती एनी बेसेन्ट)

नैतिक वचन

अलका श्रीवास्तव

1. जो काम आप आज कर सकते हैं, उसे कभी भी कल पर न छोड़ें।
2. अज्ञानी होना उतनी षर्म की बात नहीं है जितनी कि किसी काम को सही ढंग से सीखने की इच्छा न होना।
3. जो जरूरी है उससे षुरू करें, फिर जो मुमकिन ह वह करें, और आप पायेंगें की आप नामुमकिन काम भी करने लगे है।
4. अगर आप सचमुच सफल होना चाहते हैं, तो उन कामों को करने की आदत डालिए, जिन्हे असफल लोग नहीं करना चाहते।
5. कड़ी मेहनत करने वाले लोगों की उम्र, तजुर्बा और षैक्षिक योग्यता, जो भी हो उनकी मांग हर जगह होती है।
6. आपको जिंदगी में यह चुनाव करना है, कि आप अनुषासन की कीमत चुकाएंगें, या अफसोस की।
7. भाग्य उनकी मदद करता है, जो अपनी मदद खुद करते हैं।
8. अधिकार हमारी जिम्मेदारियों से बड़े नहीं हो सकते।
9. धैर्य से आत्मविष्वास, दृढ़ता और समझदारी भरा नज़रिया पैदा होता है, जिससे आखिरकार कामयाबी हासिल होती है।
10. जिसे उड़ना सीखना हो, उसे पहले खड़ा होना, चलना और दौड़ना आना चाहिए।
11. जो लोग बिना जिम्मेदारी स्वीकार किए अपने अधिकारों का प्रयोग करते हैं, वे अक्सर अपने अधिकारो को भी खो बैठते हैं।
12. बिना उत्साह के कोई बड़ा काम नहीं होता।
13. निश्कपटता सही फैसले का मापदंड नहीं है। कोई ईमानदार होते हुए भी गलत हो सकता है।

14. कठोरता एक कमज़ोर आदमी की झूठी ताकत है।

15. बाधाएं ऐसी डरावनी चीजं हैं, जो लक्ष्य से आंखे हटने पर आपको दिखती हैं।

16. ''जीतने वाले कोई अलग काम नहीं करते, वे हर काम को अलग ढंग से करते हैं।''

पत्नी–प्रवीण कुमार श्रीवास्तव
लेखापरीक्षक

हमारे सेवानिवृत्त तारे

कृश्ण कुमार चौरसिया
वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

दिनांक 31.07.1973 को महालेखाकार, जम्मू एवं कष्मीर में लेखापरीक्षक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

उनकी सीढियाँ

- वरिश्ठ लेखापरीक्षक (03.01.1992 से)
- अनुभाग अधिकारी (08.06.1993 से)
- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (05.06.1996 से)
- लेखापरीक्षा अधिकारी (01.12.2006 से)
- वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (01.01.2009 से)

उपर्युक्त सेवाओं को निभाकर दिनांक 31.12.2011 को वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए।

अरूण कुमार चौधरी
वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

दिनांक 05.11.1973 को लेखापरीक्षक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

उनकी सीढियाँ

- वरिश्ठ लेखापरीक्षक (18.05.1990 से)
- अनुभाग अधिकारी (28.06.1996 से)

- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (21.06.1999 से)
- लेखापरीक्षा अधिकारी (26.12.2006 से)
- वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (01.01.2009 से)

उपर्युक्त सेवाओं को निभाकर दिनांक 30.04.2012 को वरिश्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी क पद से सेवानिवृत्त हुए।

चुटकुले थ्पससमते

1. एक गांव में पषुओं का मेला लगा था। पड़ोस के गांव से हलकू व ननकू भी अपनी भैंसे ले आये थे।

हलकू : कहो ननकू, तुम अपनी कितनी भैंसे लाए हो?
ननकू : पांच
हलकू : लेकिन दिख तो दो ही रही हैं।
ननकू : बाकि तीन ब्यूटी पार्लर में फेषियल के लिए गई हैं।

2. एक सेठ ने अपना डेयरी फार्म खोलने के लिए अच्छी व दुधारू गायों हेतु विज्ञापन दिया। वहां एक ही गांव के हीरा व सोहन भी अपनी गायें लेकर पहुंचे।

हीरा : अरे सोहन, तुम्हारी गायें तो बीमार हैं?
सोहन : तो क्या हुआ।
हीरा : यहां इतनी दुधारू गायें आयी हैं तो फिर तुम्हारी गायें सेठ क्यूं लेगा।
सोहन : चिंता की कोई बात नहीं। ये पिछड़ी जाति से हैं। आरक्षण में आ जायेगीं।

।द ंचचसम वि कपेबवतक – झगड़े की जड़
।द ंचचसम वि वदमे मलम – आँखों का तारा

। इमक वि तवेम	–	आरामदायक
। इवदम वि बवदजमदजपवद	–	विवाद का कारण
। बीपसकश्े च्संल	–	बच्चों का खेल
। विवसश्े मततंदक	–	मूर्खतापूर्ण कार्य
। तिमम चवतज	–	बिना कर की बन्दरगाह
ळवसकमद ।हम	–	स्वर्णयुग
। हसं कंल	–	प्रसन्नता का दिन
जीम स्पवदश्े ैंतम	–	बड़ा भाग
। उंपकमद `चममबी	–	प्रथम भाशण
। उंद वि समजजमते	–	विद्धान
फनममत थ्पी	–	विचित्र व्यक्ति
। तंपदल कंल	–	मुसीबत के दिन
त्पदह स्मंकमत	–	सरदार
।ुैनंतम कमंस	–	अच्छा व्यवहार
्रद ैवदह	–	अन्तिम गीत
। जींदासमे ज्ंग	–	श्रेयहीन कार्य